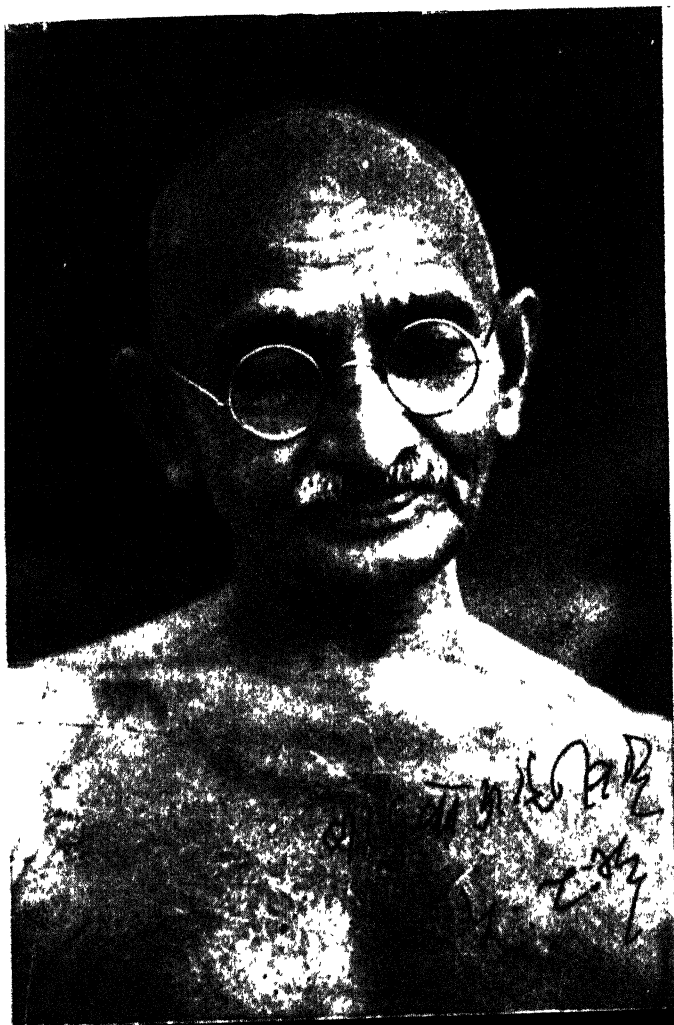


प्रायुक्त आरक्षण

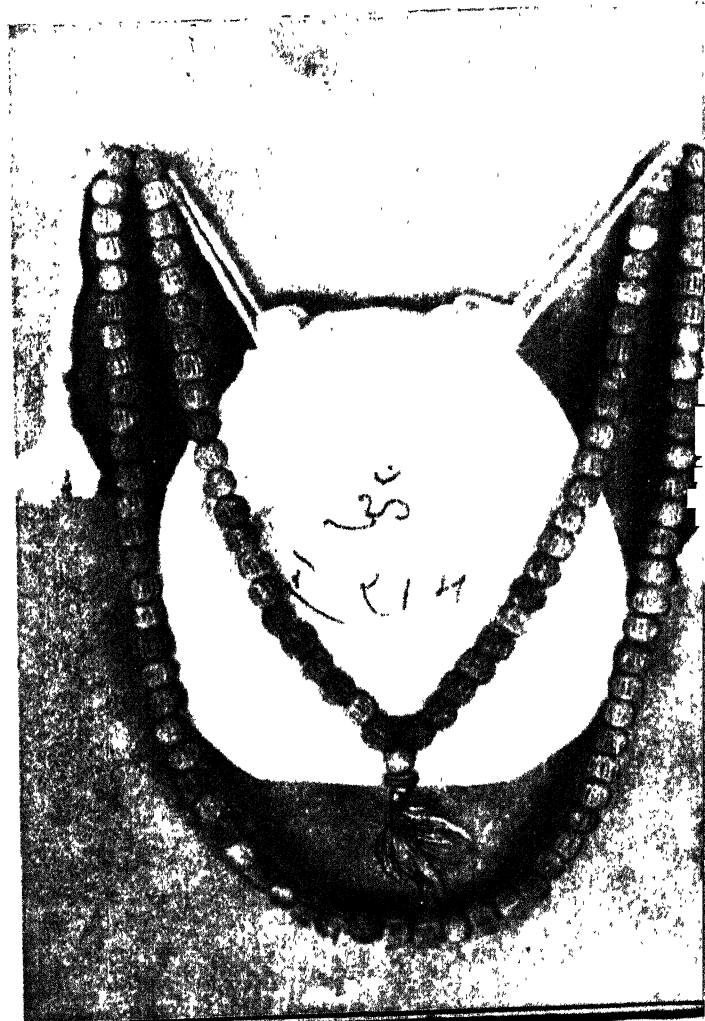
197-4

12



बापू से मिला
दुआ प्रसाद -
माला और
श्रैली

•
आनंद
हिमोरानी



प्रायुक्त अतिरिक्त

-(समय के विचार)

20-11-22: 10-8-22



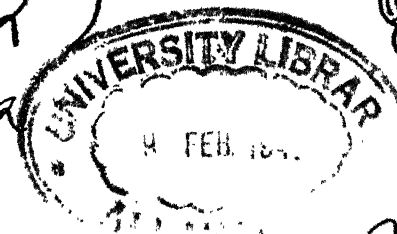
9

मि. प्र. 111/27

ਪਾਧਰਕ ਤੀਰਥਾਰ

-(ਪਾਧਰਕ ਦੇ ਵਿਚਕਾਰ)

20-11-88:10-8-88



9

ਮੀ. ਪ੍ਰ. ਸਿੰਘ

प्रकाशक
आनंद हिगोरानी
संपादक-प्रकाशक : "गांधी सीरीज"
७ एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद

101969.

(कापीराइट प्रकाशक का)
पहला संस्करण : २ अक्टूबर १९४८

मूल्य : १०)

सोल एजेंट : सस्ता साहित्य मंडल	•	मुद्रक : जे० के० शर्मा
कनाट सर्कस	•	इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
नई दिल्ली	•	इलाहाबाद

विद्या को

दो शब्द

एक पवित्र आत्मा की स्मृति में और एक बिछुड़ी हुई आत्मा के संतोष के लिये बापू ने यह “रोज़ के विचार” लिखने आरंभ किये । दोनों की बापू बहुत कद्र करते थे । अपने “रोज़ के विचार” लिखने के क्रम को उन्होंने बिरले ही तोड़ा ।

विद्या (जिसकी स्मृति में यह विचार लिखे गये हैं) की जन्मपत्री में उसे “ऋषिकन्या” के नाम से ही संबोधन किया गया था । बापू उसे बड़ी साध्वी मानते थे । मुझे अपने जीवन में ऐसी आत्माओं का परिचय शायद ही हुआ हो ।

मुझे खेद है कि विद्या के पवित्र जीवन से हम पूरा लाभ न उठा सके । परन्तु उसकी स्मृति में बापू के लिखे हुए यह “रोज़ के विचार” भी शिक्षा के सागर हैं । कैसा अच्छा हो यदि इस सागर में से मोती चुन कर हम अपना जीवन सफल करें !

१ यार्क प्लेस, नई दिल्ली
२० अगस्त, १९४८

जैरामदास दोलतराम

भूमिका

यह प्रथम बार नहीं जब कि मैं किसी पुस्तक के लिये भूमिका लिखने बैठा हूँ। इससे पहले कई बार “गांधी सीरीज़” की पुस्तकों के लिये प्रस्तावनाएं लिखने का अवसर मिला है। किंतु आज और उस समय की मनोभावनाओं में कितना अंतर है ! आज मुझ में न वह उत्साह है, न वह उल्लास। उसकी जंगह में अपने को दुःख और शोक से घिरा हुआ पाता हूँ।

मेरा बापू कहां है ?—मेरा बापू जिसके पास मैं न केवल पुस्तकों के विषय में सलाह लेने के लिये जाता था, परंतु अपने जीवन के सब संकटों और संशयों में भी दौड़ कर जिसकी शरण लेता था। बापू सचमुच ‘बापू’ थे। वही मेरे जीवन का बल और सहारा थे।

यह लिखते हुए कई घटनाएं याद आती हैं और मन भर आता है। जब मानसिक वेदना से पीड़ित मैं बापू के पास जाकर उनके चरण-कमल छूता था और वह अपनी स्वाभाविक मुसकुराहट से मेरी पीठ पर जोर से आशीर्वाद की थपकी लगा कर पूछते थे: “आनंद, कैसा है ?” उस समय ऐसा लगता था, मानो मन का आधा बोझ एकाएक कम हो गया हो। फिर किस प्रकार बापू मुझे ढाढ़स देते थे, उस अलौकिक प्रेम का स्मरण-चिह्न रूप और साक्षी यह सारी पुस्तक ही है।

सब से बड़ी घटना जिसने मेरे दिल को भारी चोट पहुँचाई, वह थी मेरी पत्नी विद्या की अकाल मृत्यु। बापू के अलावा यदि मुझे किसी और से प्रेरणा मिलती थी, तो वह विद्या से। वही मुझे पहले-पहल बापू के पास साबरमती आश्रम में भेजने का कारण हुई थी। बापू उसे अपनी बेटी मानते थे और उन्होंने काफ़ी समय तक उसे अपने पास आश्रम में भी रखा था। सच तो यह है कि बापू और विद्या, ये दो व्यक्ति ही मेरे जीवन में परिवर्तन लाने के हेतु थे। यदि वे न होते, तो पता नहीं मैं आज कहां और किस हालत में होता !

२० जुलाई, १९४३ को जब विद्या इस संसार से विदा हो गई, तब मुझे ऐसा जान पड़ा मानो सारा संसार मेरे लिये सूना हो गया। एक बापू ही थे जो मेरे दुःखी मन को आश्वासन दे सकते थे, लेकिन उस समय वह मेरी पहुँच से बहुत दूर, आगाखां महल, पूना, में थे। जब बापू ६ मई, १९४४ को छोटे तब मैं लखनऊ में अपने कान का इलाज करवा रहा था। बापू से मिलने के लिये अधीर-सा हो उठा, इस कारण उनको एक तार मुंबई भेजा, जिस में मैंने लिखा था कि मैं अपने को कितना अकेला महसूस कर रहा हूँ। कान का इलाज अधूरा ही छोड़ कर मैंने उनके पास जाने की आज्ञा माँगी। उसके उत्तर में बापू ने यह तार भेजा :

“अपने को अकेला समझने की तुम्हें इजाजत नहीं है। ईश्वर ही हमारा निरंतर साथी है। कान का इलाज पूरा करवा कर आ सकते हो।”

इस तार से मुझे कुछ धीरज तो मिला, किंतु चित्त की शांति न पा सका। इसलिये बापू को इस संबंध में एक पत्र लिखा, जिस के उत्तर में बापू ने २ जून, १९४४ को इस प्रकार लिखा :

“तुम्हें अब शोक करना छोड़ देना चाहिये। जो कुछ तुमने पढ़ा और पचाया है, उस सबसे सहारा लो। एक सच्चा विचार भेजता हूं जो कि मुझे एक बहन ने भेजा है। उसे अंतर में उतार लो। विद्या मरी नहीं है। वह तो अपना शरीर, जिस में वह निवास करती थी, यहां छोड़कर चली गई है, और उसने अपने योग्य दूसरा शरीर धारण कर लिया है।”

और इस खत के साथ-साथ बापू ने अंग्रेजी में छपा हुआ वह ‘सच्चा विचार’ भी भेज दिया था जो कि उन्हें पूज्य कस्तूरबा की मृत्यु पर एक पश्चिमी महिला, श्रीमती ग्लेन० ई० स्नाईडर, ने ग्राइम्स (अमेरीका) से आश्वासन देने के लिये भेजा था :

“यह ठीक नहीं, ऐसा मत कहो
कि वह मर गई है। वह सिर्फ हमसे दूर चली गई है !
प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान के साथ,
बिदाई का संकेत करते हुए
वह एक अनजाने देश में चली गई है,
और हमें यह कल्पना करते हुए छोड़ गई है
कि कितना सुंदर वह देश होगा जहां उसने बसना पसंद किया है !
यह समझो कि उसे वहां भी वैसा ही प्रेम प्राप्त है
जैसा कि उसे यहां प्राप्त था;
यह समझो कि वह अब भी वैसी ही है, और कहो—
वह मरी नहीं, सिर्फ हमसे दूर चली गई है !”

फिर २० जून, १९४४ को एक पत्र में बापू ने लिखा :

“विद्या की मृत्यु पर तुम हर समय विचार न किया करो और न विचलित ही हो। यदि ज़िंदा रहते हुए वह तुम्हारे जीवन में प्रेरणा देती थी, तो अब, जब कि वह अपने विश्रामघर गई है, और भी अधिक प्रेरणा तुमको उससे मिलनी चाहिये। मेरी समझ में तो आत्माओं के सच्चे ऐक्य का यही अर्थ है। इसका अत्युत्तम उदाहरण ईसा का है, और आधुनिक काल में रामकृष्ण परमहंस का। मरने के बाद वे और भी प्रभावशाली बने। उनकी आत्मा कभी मरी नहीं और ऐसे ही विद्या की भी आत्मा नहीं मरी है। इसलिये तुम्हें शोक करना अवश्य छोड़ देना चाहिये, और सामने आनेवाले कर्तव्य का ही विचार करना चाहिये।”

फिर १९ जुलाई, १९४४ को एक पत्र में उन्होंने लिखा :

“विद्या बड़ी साध्वी थी। उसका हृदय सुनहरी था। उसकी त्याग की इच्छा बड़ी थी। उसका प्रेम समुद्र-सा था। तुमको उसके लायक बनना है।”

इस प्रकार पत्र-व्यवहार द्वारा बापू मुझे शांति-पाठ सिखाते रहे। जब कुछ दिनों के बाद उन्होंने लिखा कि वह ३० सितम्बर, १९४४ को सेवाग्राम जा रहे हैं, और अगर मुझे उनसे मिलना है तो मैं भी वहां जा सकता हूं, तब मैं अपने आपको रोक न सका, और शीघ्र वहां पहुँच गया। बापू के पास पहुँचने पर पहले तो अपने दुःख को दबा कर खुश रहने का मैंने प्रयत्न किया, लेकिन उसमें सफल न हो सका। इसलिये एक दिन, प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद, मैं बापू के पास चला गया। उस समय वह मच्छरदानी के अंदर लेटे हुए थे। मैं अपना सिर उनकी छाती पर रख कर खूब रोया। करीब घण्टे भर तक मैं ऐसे सिर झुका कर बैठा रहा और बापू बड़े प्यार से आश्वासन के मीठे मीठे शब्द मेरे कान में बोलते रहे। वस, उस दिन से रोज प्रातःकाल बापू के पास जाकर इस प्रकार अपने दुःखी मन को शांत करने का मेरा नियम-सा बन गया।

सेवाग्राम आश्रम में पूरे दो मास रहा। जो बहुमूल्य समय मैंने इस प्रकार अपने प्यारे बापू के साथ बिताया और जो प्रेम उन्होंने मुझ पर बरसाया, उसे मैं कैसे भूल सकता हूँ ! आज भी यह सोच कर कि किस भाँति बापू मुझे अपने बच्चे की तरह समझाते थे, मेरी आँखों में पानी आ जाता है ! बापू न केवल उस समय हमदर्दी दिखाते और धीरज देते, बल्कि यह विचार कर कि अपने दुःख में मैं उनके उपदेश कहीं भूल न जाऊँ, वह कागज़ पर भी कुछ लिख देते, और मुझे उस पर दिन भर मनन करने के लिये कहते। १३ अक्टूबर, १९४४ से १५ दिन तक बापू लगातार लिखते रहे और उसके बाद कभी कभी। यह तब तक चलता रहा जब तक उन्होंने मुझे नैसर्गिक उपचार के लिये भीमावरम् भेजा।

मैं समझता हूँ कि मेरे दुःखी दिल को सांत्वना देने के लिये जो कुछ भी बापू ने उन दिनों लिखा वह सबके लिये सहारा रूप हो सकता है—विशेषकर आज जब बापू अपने स्थूल शरीर से हमारे पास नहीं हैं। परंतु यह सब भूमिका में देना मुश्किल-सा लगता है। इसलिये केवल कुछ दिनों के विचार यहां दिये जाते हैं:

“जो सिर्फ ईश्वर का सहारा लेते हैं, वे मनुष्य का सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरे हों चाहे ज़िंदा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे।”

१३-१०-४४

“तुम ‘ट्राइ अगेन’ (‘फिर से कोशिश करो’) वाली कविता जानते हो ? दुःख से लाचार बनने की तुम को इजाज़त नहीं है। दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वर पर ही विश्वास रखो। विद्या की मीत से यही शिक्षा मिलती है। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा हो रही है।”

१४-१०-४४

“ईश्वर की कृपा ईश्वर का काम करने से आती है। तुमको ईश्वर का काम करना है। कभी चरखा चलाता है ? चरखा चलाना सब से बड़ा यज्ञ है। रोते रोते भी चरखा चलाओ।”

१५-१०-४४

“शांति में, सुख में तो सबकुछ होता है। चरखा दुःखी का, भूखों का, सहारा है। दुःख में तो छूटना ही नहीं चाहिये।”

१६-१०-४४

“तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण भी फुरसत न मिले। यही मृत प्रियजनों के प्रति सच्चा प्रेम है। अंग्रेजों को देखो। वे भी अपने प्रियजनों को प्यार करते हैं, लेकिन जब वे प्रियजनों से जुदा होते हैं तो और भी अधिक अपने को सेवाकार्य में समर्पण कर देते हैं।”

१७-१०-४४

“मुए जिंदों को कुछ भेजते हैं, उसका हमें पता नहीं चलता है; लेकिन जिंदे मुअों को भेजते हैं, यह निःसंदेह है। इसलिये हम उनके पीछे कभी न रोयें।”

“ईश्वर-कृपा (Grace) ईश्वर का काम करने से आती है। ईश्वर के काम शरीर से, मन से, वाणी से, दुःखी की सेवा करने से होते हैं।”

१८-१०-४४

“ऐसा सोचो कि गरीब आदमी तुम्हारी हालत में क्या कर सकता है। उसकी पत्नी मर जाय, तो वह दुगुना काम करेगा। वह भी ईश्वर का भक्त है। भीतर का आनंद ईश्वर का काम करने से ही पैदा होता है। हम सब अपने को गरीब की हालत में रख दें। बहरेपन को ईश्वर की वरक्षीश समझो। एक क्षण भी बगैर काम के रहना ईश्वर की चोरी समझो। मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनंद का नहीं जानता हूं।”

“सबसे अच्छा तरीका तुम्हारे लिये २० ता० मनाने का तो यह है कि तुम सारा दिन सूत कातते रहो, या अपनी रुचि के अनुसार आश्रम के कोई भी काम में लगे रहो, और उसके साथ रामनाम को जोड़ दो।”

“(शरीरों को खिलाना) बिलकुल ग़ैरज़रूरी है। जिन्हें सचमुच ज़रूरत हो, उन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो।”

१९-१०-४४

“आज का दिन तुम्हारे लिये शुभ दिन है। विद्या को मैंने काफ़ी रुलाया था। वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी : ‘भगवान बताओ’। मैंने उसे डाँटा और कहा : ‘भगवान को चरखे में देखेगी।’ आखिर समझ गई।”

“हम यंत्र हैं और यांत्रि भी। शरीर यंत्र है, आत्मा यांत्रि। आज तुम्हें इस यंत्र से यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिमाव देना है।”

२०-१०-४४

“मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मारफ़त ईश्वर को निश्चित देखता है। चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है, और उसका दृश्यफल भी है।”

“मनुष्य को मनुष्य का सहारा चाहिये, इसलिये तो आश्रम वग़ैरा संस्थाएँ रहती हैं। मनुष्य का सहारा सान्निध्य से ही होता है, ऐसा नहीं है। कोई डाक़ द्वारा करते हैं, कोई सिर्फ़ विचार से, कोई मरे हुए के सद्बचनों से, जैसे हम तुलसीदास से रोज़ मिलते हैं।”

२१-१०-४४

“आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।”

२२-१०-४४

“मेरे पास बैठने में कोई हानि नहीं है, लेकिन ऐसे वक्त पर, जैसे महादेव करता था और कृपालाणी, तकली खलाना। पीछे ईश्वर के समय की चोरी नहीं होगी। तकली हमारा मूक मित्र है। कुछ आवाज़ ही नहीं करती, और जगत के लिये

जो धागा चाहिये उसे निकालती रहती है। तकली चलाते समय हम सबकुछ देख सकते हैं और सुन सकते हैं। मैं तो यहां तक जाता हूं कि ईश्वर-कृपा होगी तो इस तरह कर्म में जुते हुए रहने से कान भी खुल जाय। लेकिन जब इस तरह कर्मयोगी बनोगे, तब कान की परवाह थोड़ी रहेगी। वानर-गुरु तो जान-बूझ कर कान बंद करता है, क्योंकि आसपास की आवाज़ उसके रास्ते में रुकावट डालती है।”

२३-१०-४४

“मेरी शांति और मेरे विनोद का रहस्य है मेरी ईश्वर, यानी सत्य, पर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूं कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूं। मुझ में ईश्वर है, वह मुझसे सबकुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूं? यह भी जानता हूं कि जो कुछ मुझ से कराता है, मेरे भले के ही लिये है। इस ज्ञान से भी मुझे खुश रहना चाहिये। ‘वा’ को ईश्वर ले गया सो ‘बा’ के भले के लिये। इसलिये ‘बा’ का वियोग मुझे दुःख देनेवाला नहीं होना चाहिये। इस वास्ते विद्या की मृत्यु से तुम्हारा दुःख मानना पाप समझो।”

२४-१०-४४

“शारीरिक काम ज्यादा करो। पढ़ने का, पढ़ाने का अवश्य करो, लेकिन तकली, चरखा पर खूब काम करो। भाजी साफ़ करो, आश्रम के काम में हिस्सा लो और सब काम करने में ईश्वर के दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सब में भरा है।”

२५-१०-४४

“मेरे लेखों में से जो निकालना है सो निकालो। यह काम अच्छा है। लेकिन शारीरिक परिश्रम खूब उठाना चाहिये। विद्या का स्मरण करना और रोना बहुत हानिकर है। वह स्मरण अच्छा है जो आत्मा को ऊँचे चढ़ाता है, जागृत करता है। आत्मा का स्वरूप सत् (सत्य), चित् (ज्ञान हृदय से मिला हुआ, अनुभवसिद्ध) और आनंद है। आनंद में दोनों की परीक्षा है—आनंद भीतर का, जो बाहर में देखने में आता है।”

२६-१०-४४

“सब ईश्वर करता है और वह जो करता है वह अच्छे के ही लिये है, ऐसा समझ कर आनंद में रहो।”

१३-११-४४

“रोना हँसना दिल में से निकलता है। (मनुष्य) दुःख मान कर रोता है। उसी दुःख को सुख मान कर हँसता है। इस-लिये ही रामनाम का सहारा चाहिये। सब उनको अर्पण करना तो आनंद ही आनंद है।”

१६-११-४४

इस प्रकार बापू मेरे उद्विग्न मन की शांति के लिये मुझे हर रोज प्रबोध देते थे। उनको मेरे स्वास्थ्य का भी बराबर खयाल रहता था। यद्यपि वह मुझे बार बार कहते थे कि मैं अपने बहिरेपन को “ईश्वर की बख्शीश” समझूँ, फिर भी मैं चिंतित रहता था। इस कारण उन्होंने मुझे क्रुदरती इलाज के लिये भीमावरम् भेजने का निर्णय किया। मैं २८ नवम्बर को वहाँ जाने वाला था और जैसे-जैसे बापू से बिदा होने का समय निकट आ रहा था, मैं एक तरह की व्याकुलता अनुभव करता था। बापू के मीठे संसर्ग का और उनके प्रेरणा देनेवाले उपदेशों का मैं ऐसा आदी हो गया था कि उनसे जुदा होना मुझे कठिन-सा जान पड़ता था। मैं इसी चिंता में था कि मन में एक विचार उठा। कैसा अच्छा हो यदि बापू मेरे लिये हर रोज कुछ न कुछ लिखते रहें और मुझे भीमावरम् डाक द्वारा भेजते रहें !

दूसरे दिन सवेरे, मैंने बड़े संकोच के साथ बापू से यह बात कही। बापू ने बड़े ध्यान से मेरी बात सुनी और कहा : “तुम्हारी बात तो अच्छी है, इस पर ज़रूर विचार करूँगा।” दो-तीन दिन के भीतर ही बापू ने लिखना स्वीकार कर लिया। मुझे बेड़ी खुशी हुई। मैंने एक अलबम बना कर उनको दे दिया। २२ अक्टूबर को जब बापू ने अपने प्रसन्न मुख से मुझ से कहा : “आनंद, मैंने तुम्हारे लिये लिखना शुरू कर दिया है, और वह भी २० ता० से”, तब मैं खुशी से फूला न समाया, और एकाएक मेरा सिर सच्ची कृतज्ञता से उनके सामने झुक गया। उन्होंने २० ता० का जो विशेष उल्लेख किया, उसका महत्त्व मैं ठीक ठीक समझ गया; क्योंकि उस दिन को मैं बहुत ही पवित्र मानता था और विद्या की याद में हर महीने मनाया करता था। उस दिन (२०-११-४४) से करीब दो साल तक बापू रोज मेरे लिये और विद्या की स्मृति में एक उपदेश लिखते रहे।

बापू से फिर मेरा मिलना पूना में जून १९४६ में हुआ। वहां एक दिन अकस्मात् मैंने उनसे पूछा कि वह “रोज के विचार” लिखते हैं या नहीं। बापू ने अपनी स्वाभाविक मुसकुराहट के साथ अपने सामने पड़ी हुई नोटबुक दिखायी। उस पर उनके पवित्र हाथों से मेरा नाम लिखा हुआ था। उन्होंने कहा : “देखो आनंद, मैंने इस पर तुम्हारा नाम लिख छोड़ा है। तुम्हारे अलबम के कागज़ पूरे हो जाने पर मैंने इस पर ही विचार लिखना जारी रखा है।”

यह सुन कर मैं अति प्रसन्न हुआ और जब बापू से उन विचारों के छपवाने की आज्ञा माँगी, तब उन्होंने कहा : “इन में धरा ही क्या है, जो तुम छपवाना चाहते हो ? यदि छपवाना ही है तो मेरे मरने के बाद छपवाना। अब क्या जल्दी है ? कौन जानता है कि जो कुछ मैं आज लिख रहा हूँ, उस पर मैं आखिर दम तक टिक सकूँगा। यदि टिक सका तब तो छपवाना ठीक होगा, नहीं तो नहीं।”

“बापू आप तो १२५ वर्ष ज़िंदा रहेंगे, तब तक मैं तो ज़िंदा नहीं रहूँगा। फिर यह ‘विचार’ मैं कैसे छपवा सकूँगा ?” मैंने हँस कर कहा।

बापू गंभीर होकर बोले : “हां, १२५ वर्ष ! अगर मैं इस तरह ईश्वर का काम करता रहा, जैसे कि अब कर रहा हूँ, तब तो मुझे ज़िंदा समझो। लेकिन इससे ज़रा भी कम कर पाया तो समझना कि उस दिन से तुम्हारा बापू मरे हुए के बराबर ही है। पता नहीं कितना समय मैं इस तरह ईश्वर का काम कर सकूँगा।”

बापू को इतना गंभीर देख मैं चुप रहा, और इस बात को वहीं छोड़ दिया।

फिर मार्च १९४७ में मुझे “भंगी निवास”, दिल्ली, में बापू के साथ १५ दिन रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां एक दिन मैंने बापू से पूछा कि उन्होंने “रोज के विचार” लिखना क्यों बंद कर दिया था। बापू ने उत्तर दिया : “नवाखाली में हिन्दू-मुसलमानों की एकता के लिये मैंने सबकुछ छोड़ा, जिससे मैं एकचित्त होकर उसकी जिम्मेदारी को पूरी तौर से निभा सकूँ। आश्रम छोड़ा, ‘हरिजन’ के लिये लिखना छोड़ा। तब सोचा कि ये विचार लिखना भी क्यों न बंद कर दूँ। मैं लिखना बोल तो समझता ही था। रोज़ रात को काम पूरा होने पर दिल में विचार आता था कि अभी कुछ काम और करना है। मैं कहीं से देख कर भी नहीं लिख सकता था, फिर यह भी खयाल रहता था कि दुबारा वही न लिखूँ। इसलिये लिखना बंद ही कर दिया। अब जो मैं रोज़निशी रखता हूँ, वह तो जब मैं थक जाता हूँ तो

मनू या किसी और को लिखने के लिये कह देता हूँ। लेकिन ये 'विचार' तो मुझे अपने ही हाथ से लिखने पड़ते थे न ? इसलिये भी बोझ-सा लगते थे। तो भी अगर तुम को मेरे लिखने से कुछ आनंद मिलता है, तो मैं फिर से लिखने के लिये तैयार हूँ।”

बापू मेरे जैसे तुच्छ मनुष्य के लिये इतना परिश्रम उठावें, यह बात भला मैं कैसे मान सकता था ! मैंने कहा : “बापू मुझे आनंद तो जरूर मिलता है, मगर मैं यह नहीं चाहता कि मेरे लिये आप को इतना कष्ट उठाना पड़े। मैं देख रहा हूँ आप आजकल किस प्रकार काम में लगे हुए हैं। आपने पहले ही मुझ पर बड़ी कृपा की है। अब आशीर्वाद दें कि मेरी ईश्वर पर श्रद्धा बढ़े और अपने को दुःखी न मानूँ।”

कुछ दिन के बाद मैंने बापू से फिर 'विचार' छपवाने की आज्ञा माँगी। इस बार बापू ने अपनी अनुमति दे दी, और कहा : “लेकिन अच्छा होगा यदि एक बार सुशीला या प्यारेलाल से उन्हें ठीक करवा लो। इनको सुधारने का समय मैं तो अब नहीं निकाल सकूँगा। अच्छा होगा अगर सुशीला से यह काम कराओ। वह अच्छी तरह समझ सकेगी, क्योंकि जब ये विचार लिखे गये थे वह मेरे साथ बराबर थी। देखो, अगर वह बिस्तर पर पड़ी पड़ी सुधारने का समय निकाल ले।” (सुशीला बहन उस समय मुंबई में अस्पताल में थीं।) उस समय तो इन विचारों को सुशीला बहन से सुधरवाने का अवसर न मिल सका, और इस बीच मैं वह महान् दुर्घटना घटी जिसके कारण बापू को अपना शरीर तजना पड़ा। फरवरी के आरंभ में मैं बापू की अस्थियों के दर्शन के लिये दिल्ली गया था। उस अवसर पर सुशीला बहन ने इन विचारों को पढ़ कर उनमें कुछ थोड़े सुधार किये। इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ। लेकिन यह कहना अनुचित न होगा कि इन विचारों में दरअसल सुधार की बहुत कम गुंजाइश थी। बापू का यह विचार कि उनकी यह पुस्तक उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हो, वह भी दैव की करनी से पूरा हुआ !

इन विचारों की जो अपनी सुगंधि है, वह सदा के लिये बापू की याद को जागृत रखनेवाली है। यह 'विचार' एक ऐसे व्यक्ति के हैं, जिसने अपने जीवन में बराबर उन पर अमल करने का प्रयत्न किया है। बापू के जीवन भर की अमर साधना इनके पीछे है। इस कारण इन विचारों का मूल्य हमारे अंकन से परे हो जाता है।

जहाँ तक मेरा सवाल है, यह 'विचार' मुझे सदा सदा सत्प्रेरणा देते रहेंगे। और यदि मैं अपने जीवन में इन पर कुछ अंशों में भी

चल सका, तो अपना अहोभाग्य मानूँगा। इन्हें अपने ही लिये सुरक्षित रखना मेरे लिये एक तरह की कृपणता होगी। यदि मुझ जैसे शोक-ग्रस्त दूसरे राहियों को इनसे कुछ सांत्वना मिल सके, तो यह मेरे लिये परम संतोष की बात होगी।

पुस्तक का शीर्षक चुनने का स्पष्ट कारण है। बापू के इन विचारों को मैं अपने लिये आशीर्वाद के रूप में मानता हूँ। मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि औरों के लिये भी यह ऐसे ही सिद्ध होंगे।

७, एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद

१८ सितम्बर, १९४८

आनंद हिंगोरानी

*

*

*

पुनश्च:

जैसा मैंने ऊपर बताया है, बापू ने इन विचारों को लिखने का क्रम करीब दो साल तक जारी रखा था। इस पहली जिल्द में २० नवंबर, १९४४ से १९ अप्रैल, १९४५ तक के, अर्थात् ५ महीने के दैनिक विचार दिये गये हैं। इसके बाद ऐसी ही तीन और जिल्दें प्रकाशित करने की योजना है और इस तरह लिखे गए विचार चार जिल्दों में पूरे होंगे।

यह मेरे लिये बड़े दुःख की बात है कि बापू इन विचारों को अंग्रेजी का रूप न दे सके, जैसा कि उन्होंने मेरे अनुरोध से क्रयूल कर लिया था। बापू के इन विचारों को लिखना आरंभ करने के दो-तीन दिन के भीतर ही मैंने बापू से चाहा था कि वह इन का अनुवाद अंग्रेजी में कर दें, क्योंकि ऐसा करने से यह 'विचार' सारे संसार के सामने आ सकेंगे। मैंने कहा था कि इनका अनुवाद मैं करके उन्हें दिखाऊँगा और बाद में उसको वह सुधार कर उसे अपने हाथ में लिख देंगे तो अच्छा होगा। बापू को पहले तो कुछ संकोच हुआ, क्योंकि उन्हें चिंता थी कि वह इतना समय कैसे निकाल सकेंगे। फिर भी उन्हें मेरी बात अच्छी लगी और उन्होंने मुझसे अनुवाद का काम शुरू करने को कहा।

मैं बापू के अनेक कामों को जानते हुए उन पर बहुत बोझ न डाल सकता था। इसलिये मैंने बात जहां की तहां रहने दी। लेकिन पिछली फरवरी में, जब मैं दिल्ली में था, मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई जिसे जानकर मैं स्तब्ध रह गया। बापू किसी भी जिम्मेदारी को एक बार लेकर उसके निभाने के लिये कितना फ़िकर रखते थे, यह बात इसका एक मिसाल थी। इसी से उसका बताना आवश्यक हो जाता है। मुझसे राजकुमारी अमृत कौर बहन ने कहा कि चूँकि बापू को फ़ुर्सत न मिल सकी, उन्होंने मेरी इच्छा को पूरी करने के लिये अंग्रेज़ी अनुवाद का काम उन्हीं (राजकुमारी बहन) को सौंप दिया था। राजकुमारी बहन भी काफ़ी कामों में फँसी हुई हैं, लेकिन उन्होंने कहा है कि वह बापू की इस इच्छा को अवश्य पूरा करने का यत्न करेंगी। इसके लिये उन्होंने मुझसे अनुवाद का एक मसविदा तैयार करने को कहा है। यह जाहिर करते हुए मुझे खुशी होती है कि कुछ काल के बाद अंग्रेज़ी पाठकों के लाभ के लिये यह 'विचार' अंग्रेज़ी भाषांतर में भी प्रकाशित हो जायेंगे, और वैसे ही देश की अन्य भाषाओं में भी।

आ० हि०

ॐ पायुके आरणादि

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

ईश्वर के नाम तो उतनेक हों
ले कि न
एक ही नाम तुम्हें तो यह है सत्य, सत्य
इति ति मे
सत्य ही ईश्वर है.

20 - 19-20

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

ईश्वर के नाम तो अनेक हैं
लेकिन एक ही नाम ढूँढ़ें
तो वह है सत्, सत्य ।
इस लिये सत्य ही
ईश्वर है ।

२०-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पति पावन सीताराम

सत्य के दृढ़ निबन्धों में अहिंसा के
हो ही न ही कहते.

इसी किये कड़ा हुँ कि

अहिंसा परमाधर्मः

२१-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

सत्य के दर्शन बगैर अहिंसा के हो
ही नहीं सकते । इसी लिये कहा है
कि अहिंसा परमोधर्मः ।

२१-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

सत्यकी शाय और आदि का पावन
ब्रह्मचर्य, अस्तोत्र, अष्टांग, अष्टांग, सर्वधर्म
समाप्ति, अष्टांग, अष्टांग, अष्टांग, अष्टांग
नदी की कला.

२२-११-२२

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सत्य की शोध और अहिंसा का पालन
ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म
समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इत्यादि
बगैर हो नहीं सकता ।

२२-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

प्रभु यश की आश्रय यही मनसा,
पाया, कभी तो ईहिये निज हृदय.
जो स्त्रीगमन नहीं करवाइ आ
नन सि विकल मन रखा है वर
सदा प्रभु यारी न माना माये.

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

शायदे आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

ब्रह्मचर्य का अर्थ यहां मनसा, वाचा, कर्मणा
इंद्रिय निग्रह है । जो स्त्री गमन नहीं
करता हुआ मन से विकारमय रहता है, वह
सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय ।

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

अक्सोस का अर्थ चारो नहीं करना।
दलवाही नहीं है. जो वस्तुकी हों
आवश्यकता नहीं है उस दलवा, को/भ
पारी है. चारो में हिंसा को भी मरी है.

२४-२९-८४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना
ही नहीं है। जो वस्तु की हमें आवश्यकता
नहीं है उसे रखना, लेना भी चोरी है।
चोरी में हिंसा तो भरी है।

२४-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

अपरिमित नरक यह है। को
हम कोई भी का संयुक्त करे
जिसकी हम आज देख रहे हैं।

२५ - ११ - ४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम कोई
चीज का संग्रह न करें जिसकी हमें आज
दरकार नहीं है।

२५-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

अमय में सब प्रकार के दुःखों का अभाव
 हुआ चाहिए। मरण का दुःख, मर पीट का
 दुःख, मूदन का दुःख, अपमान का दुःख, शत्रु का दुःख,
 दुःख, मृत्यु का दुःख, किसी के क्रोध का दुःख -
 इन का सब ^{आरंभ} दुःखों का अभाव है।

२६-४६-४

रघुपति सधव राजाराम



पतित पावन सीताराम

अभय में सब प्रकार के डर का अभाव
होना चाहिये । मोत का डर, मारपीट का
डर, भूख का डर, अपमान का डर, लोक-
लाज का डर, भूत प्रेत का डर, किसी के
क्रोध का डर—इन सब और ऐसे डरों से
मुक्ति, अभय है ।

२६-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं
उसी ही दूसरे धर्म को दें - नाम सद्भुक्त,
यह सिखा दी है

२७-११-४२

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं
ऐसे ही दूसरे धर्म को दें—मात्र सहिष्णुता
पर्याप्त नहीं है ।

२७-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

अ लुब्धकता निषेध ७१ के मानी इतिगनों को
 धूना इनाही नही ले किन आ को इमारे
 दिवने इहाँ जैरे इ मइना अयति जैसे इमारे
 मइने इनों की व न ने हैं एसे आ की व न ना।
 नकोई उं यहै न कोई नी य.

२८-११-४४

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१६५

पति पावन सीताराम

अस्पृश्यता निवारण के मानी हरिजनों
को छूना इतना ही नहीं, लेकिन उनको
हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात्
जैसे हमारे भाई बहनों से वर्तते हैं ऐसे
ही उनसे वर्तना । न कोई ऊंच है, न
कोई नीच ।

२८-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

योगस्थितवृत्ति निरोधः

यह मातृजन्म योग दृष्टि का पक्ष। शून्य है।

योग स्थितवृत्ति का निरोध है, पानि हमारुहिकों
उठते लक्ष्मीं पव अंकुश रखना, उसे दया देना।
यह योग ३३१।

२९-११-४४

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

यह पातंजल योग दर्शन का पहला सूत्र
है। योग चित्तवृत्ति का निरोध है, यानी
हमारे दिल में उठते तरंगों पर अंकुश
रखना, उसे दबा देना, यह योग हुआ।

२९-११-४४

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

जिस के चित में तरंग उठते ही रहते हैं
वह सत्य को दृष्टि करने का सक्त है।
चित में तरंग का उठना सत्य के तुलना
गैरा है। तुलना में जो वस्तु का ही तुलना
पर काय रहने का है वह सत्य नहीं
रहता है। ऐसे ही चित की अज्ञानि में
जगत् जगत् का आनन्द लेता है वे
जगत् जगत् है।

३०-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

जिस के चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं
वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है।
चित्त में तरंग का उठना समुद्र के तुफान
जैसा है। तुफान में जो सुकानी सुकान
पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता
है। ऐसे ही चित्त की अशांति में जो
रामनाम का आश्रय लेता है वह जीत
जाता है।

३०-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

"वृक्षान् की मर के" भजन भवन कर मे दिये
वक्ष्यता है और इनको शीतल वाहता
है. इन काम करते हैं?

१-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

“वृक्ष की मत ले” भजन मनन करने
योग्य है। वह तपता है और हमको
शीतलता देता है। हम क्या करते हैं ?

१-१२-४४

देखिये परिशिष्ट नं० १।

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
हे राम

पति पावन सीताराम

मिथ्या ज्ञान वह है झूठा।
मिथ्या ज्ञान वह है जो है न को सत्य को
दूर रखता है या करता है।

२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
रे ॥

पतित पावन सीताराम

मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें ।
मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर
रखता है या करता है ।

२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतिता पावन सीताराम

सत्यको दक्षिण को ति पे संगों को,
परिण पदना को दे उकाका मनन को वना,
आनन्द को हूँ.

३-१२-४४

देवक अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवाने

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पातित पावन सीताराम

सत्य के दर्शन के लिये संतों का
चरित पढ़ना और उसका मनन
करना आवश्यक है।

३-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मम मगलान् निज मुख से कसू वे हों
एक फलफूलों निहार कसू ते हों तो हम किसी
वैदे कहें? (अमर मगलान् मगलान्)
8-12-77

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मम के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

जब भगवान् निज मुख से कहते हैं वे
सब प्राणी में विहार करते हैं तो हम
किस से वैर करें ? (आज के भजन का
अनुवाद)'

४-१२-४४

' देखिये परिशिष्ट नं० २ ।

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशिर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राम रजाराम



पति पावन सीताराम

मीराबाई के जीवनर्म हम बड़ी बान यह
खुद व ले हैं कि उसी भावानु के किने
अपना वष कुछ छोड़ा-पतिभा.

५-१२-४४

शिवर लिली हरे नाम

जयदे आशावर्दि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मीराबाई के जीवन से, हम बड़ी बात
यह सीखते हैं कि उसने भगवान् के लिये
अपना सबकुछ छोड़ा—पति भी।

५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



शतित पावन सीताराम

मैंदाई मनुष्य कभी नहीं कर सकना!
एव कुल कर्ष सकना है।

६-१२-४४

ईश्वर अल्लभ तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

14. { श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?
सबकुछ कर सकता है।

६-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

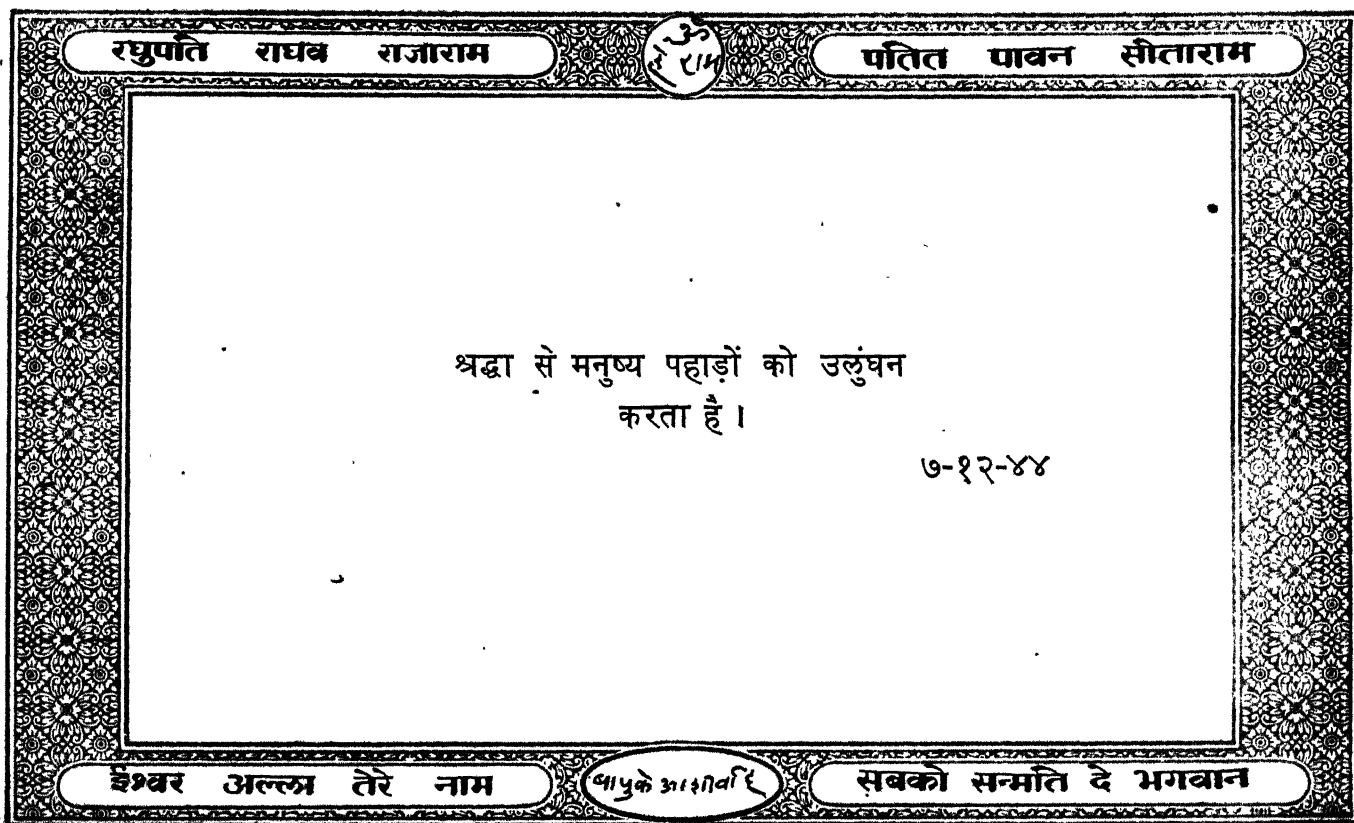
मिथिला नगरी पहाड़ी को उज्जयनी नदी है।

७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मो मनुष्य जिसे एक चीज पर एक निष्ठा
काम करवा है वह ही होर एक चीज करके
हासि हास करेगा.

C-१२-२४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एकनिष्ठा
से काम करता है वह आखीर सब चीज़
करने की शक्ति हासल करेगा।

८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति रामचन्द्र राजाराम



पति पावन सीताराम

सच्चा पुरुष बाइबल न हो मिलता है
अंगरेज ही मिलता है.

९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता है,
अंतर से ही मिलता है।

९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



शतित पावन सीताराम

जिसने 31 पनापन दवाये। उकोन सब दवाये।

१०-१२-४४

देखर अन्तर तेरे नाम

आपुने आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पतित पावन सीताराम

जिसने अपनापन खोया उसने सब
खोया ।

१०-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१॥

पति पावन सीताराम

सीधा वासा जैसा सरल है (ऐसी ही)
कठिण है. ऐसा न होता तो वर सीधा
वासा ही लेते.

११ - १२ - ४४

ईश्वर अल्लभ तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन
है । ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता
ही लेते ।

११-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतिता पावन सीताराम

"हम धरमवत भक्त हैं" ऐसा तुम कहेंगे हमारी
कहाई उम्मीद कहते हैं "तुम्हारी हमारा धर्म
जब तक धरम प्राण" हम सब हमारे जिज्ञासु
कैसे हम करते, कैसे कैसे पर?

22-22-58

हमारे अल्लाह तेरे नाम

कपड़े

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

“दया धर्म का मूल है”—ऐसा तुलसीदास
जी ने कहा है और कहते हैं: “तुलसी
दया न छांड़िये जब लग घट में प्रान ।”
हम सब दया के भिक्षुक कैसे दया करें,
और किस पर ?

१२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२६५

पतिता पावन सीताराम

हम वही न के कहें। "मैं" प्रार्थन। करती थी
उत्तर दिया "क्यों कि मैं" दिल्फ को धोका दे रही थी।
उत्तर तो दीकड़ी है लेकिन धोका देना छोड़ें, सभ्य।
क्यों छोड़ें!

१२-१२-४४

हमारे अल्लाह तेरे नाम

शुभे आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

एक बहन ने कहा : "मैं प्रार्थना करती थी,
अब छोड़ दी है।" मैंने पूछा : "क्यों ?"
उसने उत्तर दिया : "क्योंकि मैं दिल को
धोका देती थी।" उत्तर तो ठीक ही
है लेकिन धोका देना छोड़े, प्रार्थना क्यों
छोड़े ?

१३-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
ह्रीं
ॐ

पति पावन सीताराम

फल का मजन बड़ु मीठा करे मन नीयथा.
उन का काह प डु डु : मगवाना पडि म डु डु
हस्ती डों न भी न डु डु का डु डु करी डु डु नो डु डु
जनों को मुख मोरि पडा म डु डु : यथा डु डु
उन की मुख मोरि पडा म डु डु को लो डु डु
मिनी का ने का डु डु जान म डु डु उन को निमि डु डु
गाना न ल करे करे.

१४-२५-४०

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

कल का भजन बहुत मीठा और मननीय
था । उसका सार यह है । भगवान् न
मंदिर में है, न मस्जिद में; न भीतर है
न बाहर; कहीं है तो दीन जनों की भूख
और प्यास में है । चलो, हम उनकी भूख
और प्यास मिटाने के लिये नित्य कातें या
ऐसी जात मेहनत उनके निमित्त रामनाम
लेकर करें ।

101969

१४-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव सजाराम



पति पावन सीताराम

कमा बाल है कि हम सामान्यतया भी सुखसिंहरी
बनते न तो वह बाल माइर को मारे कमें वडो.
कमा अम्मा मड वडो होरा कि हम मोवडी
दालु/ करे मा आयरर मी निडु होकर जेरा
हमारे दिन के है वेंका ही कडे.

२५-१६-४४

शिव भक्त तेरे नाम

आपुके आभार

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतित पावन सीताराम

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ
से नहीं बचते भले वह शर्म या डर के
मारे क्यों न हो । क्या अच्छा यह नहीं
होगा कि हम मौन ही धारण करें या
आपस २ में निडर होकर जैसा हमारे दिल
में है वैसा ही कहें ?

१५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

पोंड्रा का इरुमी मनुष्य का गति व्यवस्था हो
जैसे दूध को उब सहे सहे भू.

२६-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

२१५

पति पावन सीताराम

नि. { थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का
नाश करता है जैसे दूध को एक
बूंद ज़हर भी ।

१६-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके अंगीर्ष

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

रही चीजों को पीछे वक्त देना हमको
रक्कत का है, जिसकी पीछे खुश
होते हैं और खुश होते हैं।।

१७-१२-४४

हम अलग तेरे नाम

साधु के आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सही चीज़ के पीछे वक्त देना हमको
खटकता है, निक्कमी के पीछे ख़ार होते
हैं और खुश होते हैं !!!

१७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

"आए नको बुझा न नको हो, आए न
बुझा न हो" कोकोन बुझा नको नुह न
आए न बुझा न हो।" १८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सबको आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

“आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा
नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा
नहीं ।”

१८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

सुंदरों की वाणी सुनो, रामायण दोषि धाग
हो लो, बसिज ३१/१ ईश्वर को हृदय में
स्थान नहीं दिला तो कुल नहीं मिले।
१९२६-२७

इश्वर अल्ला तेरे नाम

जय राम

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

संतों की वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान
हो लो, लेकिन अगर ईश्वर को हृदय में
स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया ।

१९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

मुक्ति लो हूँ मैं ~~सबसे~~ उस-पाहते हूँ लेकिन
 उसका अर्थ ही है हूँ मैं ~~सबसे~~ नहीं जानते हूँ
 कि अर्थ लो यह है कि जन्म मरण से मुक्त
 हूँ मैं।

२०-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मुक्ति तो हम सब चाहते हैं, लेकिन उसका
अर्थ ठीक २ हम शायद नहीं जानते हैं।
एक अर्थ तो यह है कि जन्म मरण से
छुटकारा पाना ।

२०-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

भक्तकवि नमैं लो कहते हैं, हे हिन्दू तो
पुक्ति न मांगो, मांगो जनमो जनम अवलार रे
इह दृष्टि से हरवें त भुक्ति कुछ अरे ४९ प ले गे हैं.

२२-२२-४४

इश्वर अल्लो तरे नाम

भयुक्त भावार्थ

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

भक्त-कवि नरसैयो कहते हैं : “हरिना
जन् तो मुक्ति न मांगे, मांगे जनमोजनम
अवतार रे ।” इस दृष्टि से देखें तो ‘मुक्ति’
कुछ और रूप लेती है ।

२१-१२-४४

इश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

अमानसिकी पनाका ध्याना की मुक्ति है
और वही भक्ति है जो ईश्वरपनिषत् को पढ़ने में
मैं पाते हैं

२२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

जगद्विजय

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

अनासक्ति की पराकाष्ठा गीता की मुक्ति
है और वही अर्थ हम ईशोपनिषत् के
पहले मंत्र में पाते हैं।

२२-१२-४४

* ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

अनासक्ति कैसे बढ़े? सुख और दुःख, दोस्त और
दुश्मन, इमारा और दुख लोंका-सब का मान समान
अनासक्ति बढ़ती है। इसी लक्ष्य के अनासक्ति का
द्वारा वाह का मान है.

२३-१२-२४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख,
दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरों
का—सब समान समझने से अनासक्ति
बढ़ती है । इसलिये अनासक्ति का दूसरा
नाम समभाव है ।

२३-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

मैंने बिंदु का समुद्र सफ़ाई है इसी तरह
मैंने करके मैला का समुद्र सफ़ाई कर दिया है
मैंने सब एक ही रूप में मिल जायेंगे वही
मैला का सफ़ाई कर दिया है।

२४-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान *

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२४

पति पावन सीताराम

जैसे बिंदु का समुदाय समुद्र है, इसी तरह
हम मैत्री करके मैत्री का सागर बन सकते
हैं। और जगत् में सब एक दूसरों से
मित्र भाव से रहें तो जगत् का रूप बदल
जाय।

२४-१२-४४

* ईश्वर अल्लाह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

३॥ ज खिलनामस हिन हौं हम जो सब धर्मो की
समानता मानते हैं उनको लि मे ईसा मसीह का
गन्ना ऐकाही माननी म है जैसा रामकृष्ण/हृ ॥

१५-१२-२४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

आज क्रिसमस दिन है । हम जो सब धर्मों
की समानता मानते हैं, उनके लिये ईसा
मसीह का जन्म ऐसा ही माननीय है जैसा
राम कृष्णादि का ।

२५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

स्युपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

बीभारि नाम मनुष्य को निपे दारु की
बात होती चाहती है. बीभारि किसी भी दृष्टिकोण
में नहीं है. जिसका वंश मारे मन सर्वथा स्वस्थ है
उसे बीभारि होने नहीं चाहती है.

२५-१२-४४

ईश्वर अल्लभ तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

बीमारी मात्र मनुष्य के लिये शर्म की बात
होनी चाहिये । बीमारी किसी भी दोष
की सूचक है । जिसका तन और मन
सर्वथा स्वस्थ है, उसे बीमारी होनी नहीं
चाहिये ।

२६-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पतित पावन सीताराम

विकारी विचार भी सी मार की
निशानी है। इन किसे हूँ सब विकारी
विचार से क्षयन रहें।

२०-१२-४४

इश्वर अल्लः तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

विकारी विचार भी बीमारी की निशानी
है। इसलिये हम सब विकारी विचार
से बचते रहें।

२७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम ,

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ
उपाय - १। नाना-ई. नाम कंठ से नही
किं तु हृदय से निकलना चाहिये।

२८-१२-२४

होवर अल्लभ तेरे नाम

मोपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ
उपाय—रामनाम—है। नाम कंठ से ही
नहीं, किंतु हृदय से निकलना चाहिये।

२८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशियर्हि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति सचिव राजाराम

ॐ
५५

पतिता पावन सीताराम

ज्यादि अनक है, वैद्य अनक है, उपचार भी
अनक है. अगर जादि को एकही दुखे
और उसको मिटा नही सके. वैद्य एक ही है
है एको गण स तो बहू ही शत्रु है जैसा
है न बच नही सके.

२९-१२-४४

सबको अल्लाह के नाम

कपड़े आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार
भी अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही
देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक
राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत सी
भंफटों से हम बच जायें।

२९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
है राम

पति पावन सीताराम

आत्म मैं है वैद्य भरते हैं, धम्पर भरते हैं. उनको
पीछे हम मल करते हैं. के कि न राम जो भरवा नहीं है,
हमेशा जिंदा रहता है और आयु का वैद्य है उसका हम
भूल जाते हैं.

३०-१२-४४

इश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

✓ आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं, उनके पीछे हम भटकते हैं। लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा ज़िंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं।

३०-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

प्रायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

इससे भी आशीर्वाद है कि हम जानते
हैं कि हम भी नखेवाले तो हैं ही, बहुत कहे
तो वैधादि की वार्स २॥५६६॥ मंडे हि
ओवे काल का कले हैं और इस लिये २०५१५
होते हैं.

३१-१२-४४

इश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

इस से भी आश्चर्य यह है कि हम जानते
हैं कि हम भी मरने वाले तो हैं ही, बहुत
करें तो वैद्यादि की दवा से शायद हम
थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस
लिये स्वार होते हैं।

३१-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतित पावन सीताराम

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धार्मिक, गरीब,
सबको मरते हुए पाते हैं वो भी संगोपन
बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन भोटे दिन
जीने के लिए मेरा आपको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं.

१-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजागम



पतित पावन सीताराम

✓ इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक,
गरीब, सब को मरते हुए पाते हैं तो भी
संतोष से बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन
थोड़े दिन जीने के लिये राम को छोड़
सब प्रयत्न करते हैं।

१-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

कौन। अर्थात् हो कि इतना समझकर
हम राम तथासे रहकर जो ध्याये अवे
उसकी भी वरुदा लकड़े और अरे अपना
जीवन अर्थात् मय बनाकर धनी बनवे।

२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

कपुके अर्थात्

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

✓ कैसा अच्छा हो कि इतना समझ कर
हम राम भरोसे रह कर जो व्याधि
आवे उसकी भी बरदाश्त करें और
अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत
करें !

२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पतित पावन सीताराम

शरीर धार/ हृदय के रोदों और ^{उसके} अन्तर्गत लोकोत्त
ही ^म हरेवते भो. यह एक ही बात है. हे. नील
हृदय शरीरवापी है और उसके गुणों के इतने
उत्तम को पश्याना शक्यते है और इतने ही
एक ही शरीर को इतने के है. किसी को ^न मालूम
(यह जो कि भा. १११ नई मिल गया है)

३-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पतित पावन सीताराम

शरीरधारी महादेव को शरीर से और
उसके लेखों से ही हम देखते थे। यह
एक ही बात हुई। देहातीत महादेव सर्व-
व्यापी है और उसके गुणों से हम उसको
पहचान सकते हैं और इस में सब एकसा
शरीक हो सकते हैं। किसी को ज्यादा
कम विभाग नहीं मिल सकता है।

३-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
८५

प्रतिपत्ति पावन सीताराम

जन्म और मरण सायद एक ही
लेखे की ही धागा नही है? एक
नरक हरवो नो मरण और दुका
नरक जन्म. दुका 'दुःख' कयो? दुखिने?

४-१-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

14
जन्म और मरण शायद एक ही सिक्के
की दो बाजू नहीं हैं ? एक तरफ़ देखो
तो मरण और दूसरी तरफ़ जन्म ।
इस से दुःख क्यों ? हर्ष क्यों ?

४-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१॥

पति पावन सीताराम

जो जन्म मरण की चार खड़ी इंसानो,
और हूँ तो हम क्यों मरु रीजारा भी उठे
दुःखी हूँ, और मरु रीजारा हूँ? प्रत्येक
मनुष्य मरु रीजारा अपने को कहें।

५-९-४५

हमारे अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जो जन्म मरण की बात सही होय तो
और है, तो हम क्यों मृत्यु से ज़रा भी
डरें, दुखी हों, और जन्म से खुश हों ?
प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ
करे ।

५-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

जगत, देव भी भरे हुए हैं। सुख को पीछे छोड़ दे। १९६६
 है। १९ को पीछे छोड़ सुख, ^{धूप} ~~वसुधै~~ कुर्वतु स्वामिनी है, प्रकाश
 है। वो अंधेरा भी जगता है तो हलु भी, इस संसार है।
 उगा सक्ति है। देव को जीवन का उपाय देव को
 मिलाता नहीं है, मरने के बाद ही, अनात्म
 है।

६-१-४५



जगत् द्वन्द से भरपूर है। सुख के पीछे
 दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख। धूप
 है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा
 भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वन्द से
 हटना अनासक्ति है। द्वन्द को जीतने का
 उपाय द्वन्द को मिटाना नहीं है, लेकिन
 द्वन्दातीत्, अनासक्त होना है।

६-१-४५

रघुपात राघव राजाराम



पातित पावन साताराम

पहली बेकाबूना है कि लखकी कुंजी लखकी
अपना ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी
अपना ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी
लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी
लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी ~~है~~ लखकी

७-१-२५

सबका नाम

सबका नाम

सबका नाम

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

यह पीछे का बताता है कि सब की कूँजी
सत्य की आराधना में है। सत्य की
उपासना से सब चीज़ मिलती है।

।

७-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

नव सत्य की आवाधन। कैसे हो? सत्य
कौन जानता है? यहां सायेदा सत्य की
बात है। जिसका हम सत्य के पक्ष में बनें व सत्य
होगा। सत्य भी बहुत खरिद है एको।
अनुभव की प्रतीति होगी।

८-१-४५

विश्वर - अल्लाह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य
कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की
बात है । जिसे हम सत्य रूप से देखें
वह सत्य । इतना सत्य भी बहुत कठिन
है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा ।

८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पवन सीताराम

नव सत्य की आदायन। कैसे हो? सत्य
को न जानना है? यहाँ सत्य की
बात है। जिसका सत्य की पक्ष में रहना।
इतना। सत्य भी बहुत खरिद है।
अनुभव प्रतीत होगा।

र. १-४५

इसका जल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य
कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की
बात है । जिसे हम सत्य रूप से देखें
वह सत्य । इतना सत्य भी बहुत कठिन
है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा ।

८-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

जानना हुआ। आदमी सले कहने से कपो.
क्षीरकना है? शर्म को मा। रे? कितनी क्षीर.
उपलब्ध है तो क्या? नौकर है तो क्या? धान
पहुँचें कि आदमी आदमी को वरा जानी है.
हम को जो आँखें श्री मादत में धुँए जाँय.
२-१-४५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जानता हुआ आदमी सत्य कहने से क्यों
भीझकता है ? शर्म के मारे ? किसकी
शर्म ? ऊपरी है तो क्या ? नौकर है
तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमी
को खा जाती है । हम सोचें और बुरी
आदत से छूट जाँय ।

९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

छहें नही तो सत्यको रामो पव नही जा।
 सकसे हैं बान यह है कि सत्यको लोभे
 सब कुछ कुरखान लखें हम हैं ऐसी दीखना
 नही चाहते, लो किता है उतरे बहुत दीखना।
 चाहते हैं केरी। अच्छा हो उतरे हमनीय
 हैं तो नीय दीखें उतरे जय होना चाहें तो
 जय काय करे, जय विचारें ऐसी न हो सके
 तो भले नीय हो दीखें, काहें हो ग
 लख जय जायगे।

१०-६-४५

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

छूटें नहीं तो सत्य के रासते पर नहीं जा सकते हैं। बात यह है कि सत्य के लिये सब कुछ कुरबान करें। हम हैं ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊंच होना चाहें तो ऊंच काम करें, ऊंच विचारें ! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। कोई रोज़ तब ऊंचे जाँयगे।

१०-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सुपति राघव राजाराम

ॐ
२१/५

पति पावन सीताराम

मैं ही अनुभव से ना हूँ, पाला हूँ कि आदि में आप-
आप आपने हूँ-एव को कोणा हूँ.

११-१-२५

इस अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जैसे अनुभव लेता हूं, पाता हूं कि
आदमी अपने आप अपने सुख दुःख का
कारण है।

११-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५/५

पतित पावन सीताराम

हेना होने हुए ३१६ मी तेवना हु. वन?
क्यों होना है!

२२-१-४५

अन्तः - अन्तः - तेरे - नाम

पापुके अ. ११६

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

१५

पति पावन सीताराम

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों
होता है ?

१२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

बाल यह है कि आइए उस विचार को
नहीं चाहता इस किसे मानता है इस
विचार को फुलता ही नहीं है

१३-१-४५

अन्ना तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पातल पावन सीताराम

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार
करना नहीं चाहता । इसलिये मानता है
ऐसे विचार करने की फुरसत ही नहीं है ।

१३-१-४५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबका सम्मति व भगवान

आज एम री ध्या जीवन व्यतीत करण,
 पाहते हुं तो भाव/किवळ आत्म रूय
 कस कर हुं तो कौचि क विचार करण,
 होजा. परिणाम. यह होजा कि होजा
 जीवन बहुत सल होजायना.

१४-१-४५

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

✓ अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

१४-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

इरानीने हों मुसाफिर कहा है. बाव राखो है.
हम मही तो मंद रोश के लिये हैं. बाहर में
'मरने'वाही, आपने धुएँ जाते हैं. कौन राख,
आँखें राखी रहना ल ?

१५-१-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

✓ ज्ञानी ने हमें मुसाफिर कहा है । बात
सच्ची है । हम यहां तो चंद रोज़ के
लिये हैं । बाद में 'मरते' नहीं, अपने घर
जाते हैं । कैसा अच्छा और सच्चा ख्याल !

१५-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

हजारों मण कचरा बड़े पवित्र मण
निकालते हैं लक काई हीरा हथोले
आवा है, कभी हम वन पवित्र मण
मोड़ दिखला भी कचरा कप मूठ निकाले
मे और हीरा हम वन हथोले होते हैं।

१६-१-४५

इश्वर अल्लो तेरे नाम

साधु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

हज़ारों मण कचरा बड़े परिश्रम से निका-
लते हैं तब कोई हीरा हाथों में आता है।
क्या हम इस परिश्रम का थोड़ा हिस्सा भी
कचरा रूप भूठ निकालने में और हीरा
रूप सत्य ढूँढ़ने में देते हैं ?

१६-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वादि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

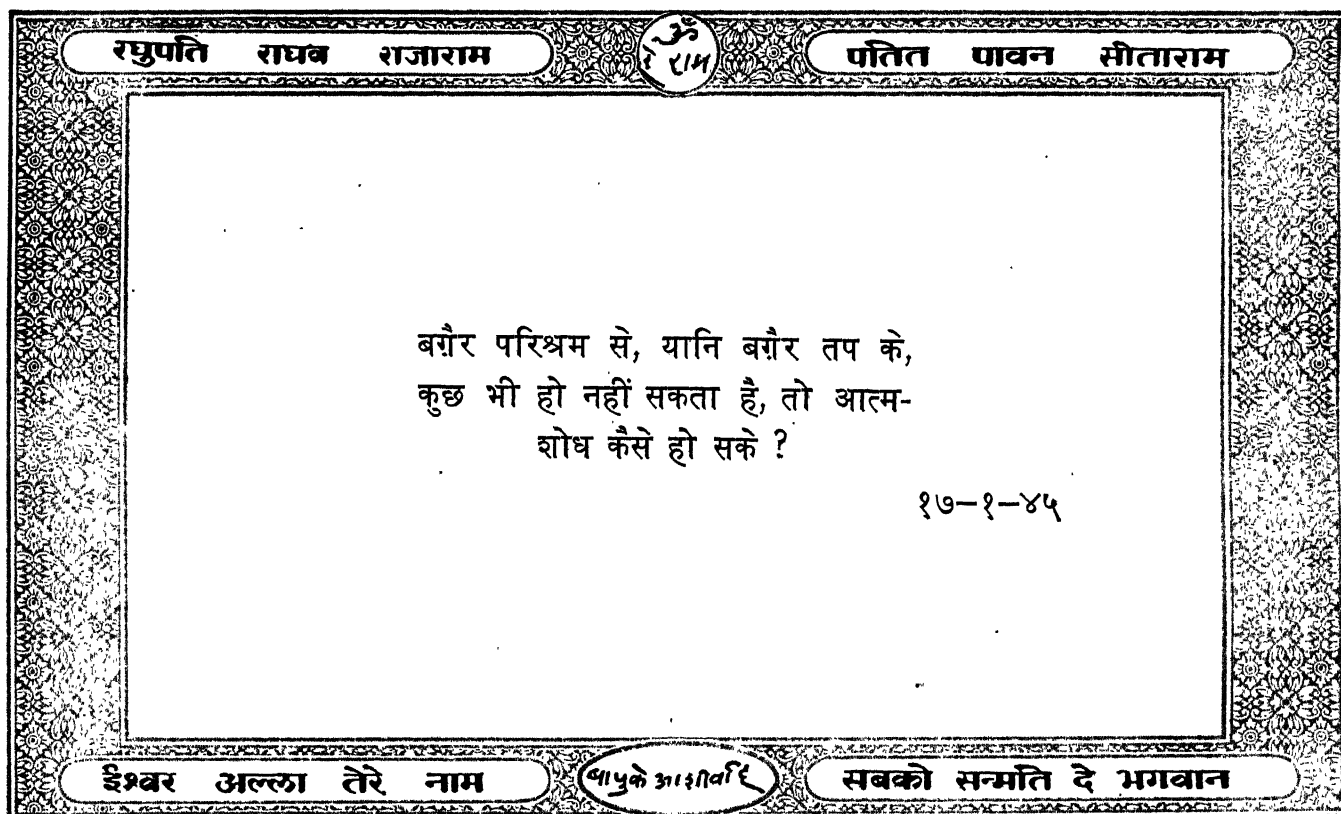
बगैर परीक्षा के या नि बगैर नफे
कृष्ण हुआ ही सका है तो अल-
ल्लाह कैसे हो सके ?

१६-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

आज सवसभ नवावादी का हँसो हँस हँस
हँसो भी निष्कर्म क्यों जानें हँस? आज हँस
नवावादी को हँसो हँसो शरीर का उच्छ्वस
भी मौज शरीर में क्यों हँस?

१८-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१॥

पति पावन सीताराम

अगर सब समय भगवान् का है तो हम
एक क्षण भी निक्कमी क्यों जाने दें ?
अगर हम भगवान् के हैं तो हमारे शरीर
का एक हिस्सा भी मौज शौक्र में क्यों दें ?

१८-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

31/1/57 का कार्य क्षिप्र है कमो'कि
31/1/57 का कार्य भगवान् न लिखे।
१९-१-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि
अनासक्त कार्य भगवान् भक्ति है ।

१९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
रे राम

पतित पावन सीताराम

मम हृदय महुताने आसीसीको फास्त्रिकाकी
दुःख फास्त्रिका मज्जीइ उताने पदुहिका
हः "इ भगवान् कि सीका ठण्डा हु
हो मिकल इ मरेन से इी दुःख अण
पदु मा मकने इ" २०-९-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
८/५

पतित पावन सीताराम

जमशेद मेहता ने आसीसी के फ़ान्सिस
की एक प्रार्थना भेजी है। उस में यह
हिस्सा है : “हे भगवान्, किसी को देने
से ही हमें मिलता है, मरने से ही हम
अमर पद पा सकते हैं।”

२०-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

तभी नका ना कि कल तो वही है जो उस पर पहुँचा
करता है.

२९-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

No.

{ जमीन का मालिक तो वही है जो उस पर
मेहनत करता है ।

२१-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

ओ कच कुच भीतर में क्या रहो है वह
वाह में अकच रह हो ही न हो सकते।

२२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जो सचमुच भीतर में स्वच्छ है वह बाहर
में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता ।

२२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

हृदय का कर्म भी निष्कल मही होवा,
हृदय वचन अंग में कभी अस्मिन् नहीं होवा,
२२-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

सच्चा कार्य कभी निक्कमा नहीं होता,
सच्चा वचन अंत में कभी अप्रिय नहीं
होता ।

२३-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

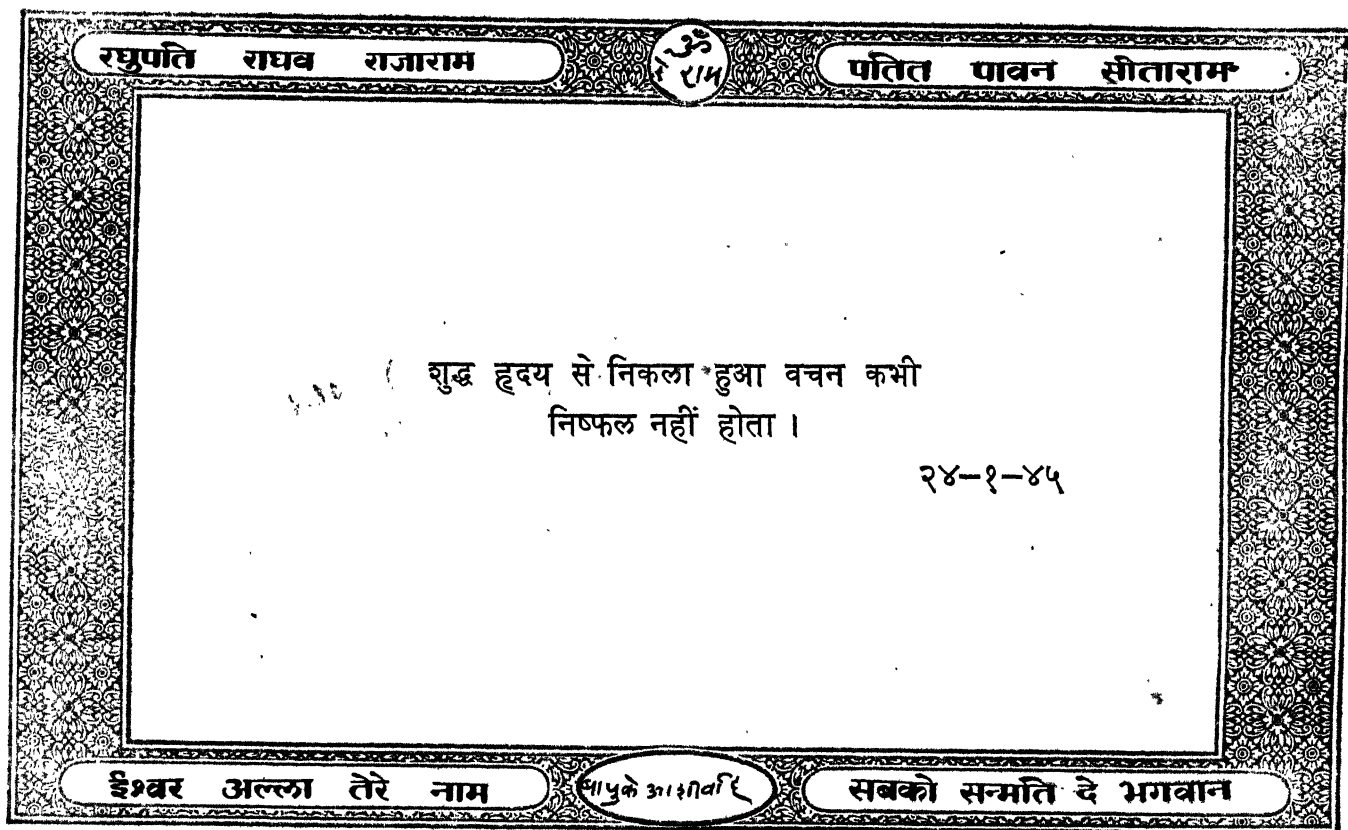
रुद्रहृदयसिखिल ३३१/१५५५
दि ५५५५ नही २७।

२८-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

आलस्य हर्ष हर्ष दुःख होवा ता एह आलस्य
नहीं रहेंगे। ऐस ही मही हमें बलि आलस्य
दुःख होवा ता बलि यही नहीं बनेंगे, नहीं
रहेंगे.

२५-१-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

आलस्य से हमें दुःख होगा तो हम आलसी
नहीं रहेंगे । ऐसे ही यदि हमें व्यभिचार
से दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे,
नहीं रहेंगे ।

२५-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान्

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

प्रथम काय बाहुमंजिक्त तरे, दामजितन,
काय. पहलो दुई परमाया करि मर्दि, अण
दाम पहलु मंगो गतो वर दुई शोभा
यो मर्दि.

मृतं नाहि न
२६-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

प्रथम काम, बाद में मिले तो, दाम
जितना काम । यह तो हुई परमात्मा की
सेवा । अगर दाम पहले मांगोगे तो वह
हुई शेतान की सेवा ।

स्वतंत्रता दिन

२६-१-४५

ईश्वर अल्ला लैरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

का मन। को मंजुषु न हो जाय। ३१-४०। ई.
मे फलशुद्ध मन को बाह्य उक्त ११५००।
३१ का मन न हो तो कठिन तो है।

२७-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

कामना को संतुष्ट नहीं करना अच्छा है ।
लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना
असंभव नहीं तो कठिन तो है ही ।

२७-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

प्रति पवन सीताराम

मो मनुष्य अपने परकाष्ठ नहीं रख
सकता है वह दूसरों पर काम नहीं करे।
काष्ठ नहीं रख सकता है. २२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जो मनुष्य अपने पर काबू नहीं रख
सकता है वह दूसरों पर कभी सच्चा
काबू नहीं रख सकता ।

२८-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

अपने पढ़ पाने के लिये पुस्तक को अपनेसे बाहर निकाल
कर तटस्थ बन कर अपने को देखना है.

२९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पति पावन सीताराम

N. 67

अपने को पहचानने के लिये मनुष्य को
अपने से बाहर निकल कर तटस्थ बन
कर अपने को देखना है ।

२९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतिता पावन सीताराम

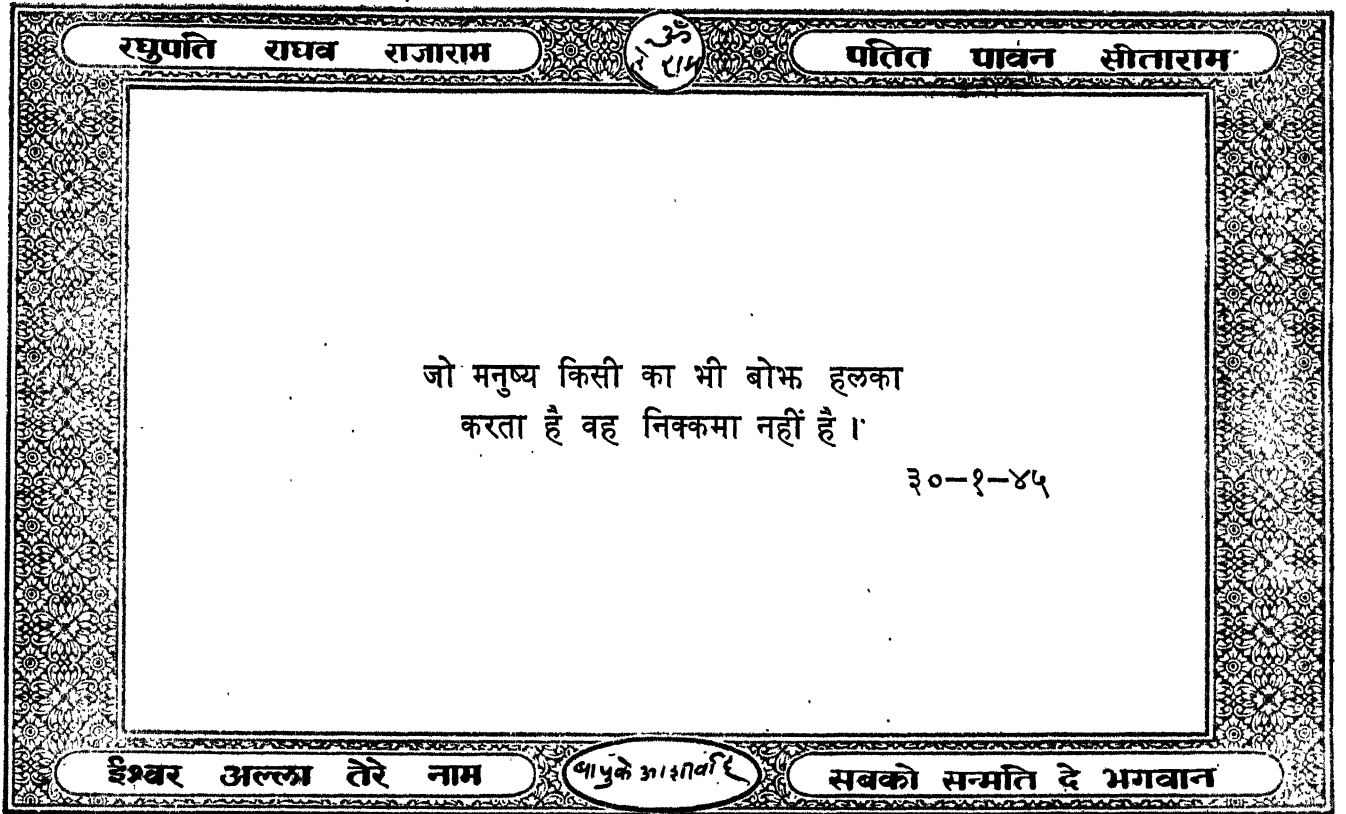
जो मनुष्य किसी कामी बोज हलका करता है वह निष्काम
नहीं है.

३०-९-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

जिसे हम क्षुब्ध और दुःख करने वही करने में हमारा सुख है,
हमारी प्राप्ति है, नही कि जो दुसरे करें या करें उसे करने में.

३१-१०-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने
में हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं
कि जो दूसरे कहें या करें उसे करने में।

३१-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

पुस्तक विधान से शक्ति तो आती है लेकिन
बिना ज्ञान के इसी वस्तु में भ्रम ही भिन्न होता है।

१-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सोताराम

पुस्त वांचन से शक्ति तो आती है
लेकिन बिना ज्ञान के सही स्वतंत्रता
नहीं मिलती ।

१-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

किसी की नजर का नी हांगना अपनी
आइराही के पना है. २-२-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

किसी की मेहरबानी मांगना अपनी
आजादी बेचना है।

२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

मनुष्यकी प्रसिद्धि/उल्लेख दिको-
हैहमे है, नहि की उल्लेख मनुष्यको
पा निवृद्धि है।

३-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मनुष्य की प्रतिष्ठा उस के दिल में—
हृदय में है, नहीं कि उसके मस्तिष्क में,
यानि बुद्धि में ।

३-२-४५

ईश्वर अल्ला - तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

धर्म वह है जो सब करण करण है मालिक सब विश्वों में
एक समुद्र जीवन में उभर प्रोत्साहन है।

१२-२-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

श्रीपुत्रे आशीर्वाद

सबको संमति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

1104 धर्म वह है जो सब धारण करता है,
यानि सब हिस्से में सब समय जीवन में
ओतप्रोत है ।

४-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

धर्म कुछ जीवन की लिखा नहीं है, मोक्ष
ही धर्म माना जाय. बगैरे धर्म का जीवन
नगुप्त जीवन नहीं है, वरु पशु जीवन है.
५-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन
ही धर्म माना जाय। बगैर धर्म का
जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु
जीवन है।

५-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

गुना गुनाई काबू पाते हैं या गुनाई कागज करते हैं
कामसे काम बोलते हैं। दोनों काथ मिलते हैं
नहीं। देखो कुदरेन सबसे गुनाई कागज करवी है,
सोती नहीं, लेकिन मरवा है।

६-२-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतित पावन सीताराम

No. १ { जो ज़्यादा काबू पाते हैं या ज़्यादा काम
करते हैं, वे कम से कम बोलते हैं। दोनों
साथ मिलते ही नहीं। देखो, कुदरत सब
से ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं,
लेकिन मूक है।

६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

जो दुःखीओ'का' ही लोहा'ता' करवा' हो' १६ ३७५७।
लोहा'ता' न ही' करवा', उध'को' इतना' समय' फं' (को)

७-२-२५

होवर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

राम

पति पावन सीताराम

जो दुःखीओं का ही ख्याल करता है वह
अपना ख्याल नहीं करेगा, उसको इतना
समय कहां से ?

७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पति पावन सीताराम

मा ननुष्य मा हरेना माधवा हौ वही देवेना॥
रुनना माधवा हौ वही सुनना॥ जोरि माकी
बगि यों फुल काडो देवेना॥ फिउ सुफको पना॥
मा नही न रावण बगि यों कना हौ॥ बगि चेको
को काडो हौ पना॥ मा नही उतका मा पना उरो
॥ मा नही हौ हरेना॥

८-२-४५

देव अल्लो तेरे नाम

बापुके प्राणीवर्दि

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही
देखेगा, सुनना चाहता है वही सुनेगा ।
जैसे माली बगीचे में फूल को ही देखेगा,
फ़िलसुफ़ को पता भी नहीं लगेगा बगीचे
में क्या है । (वह) बगीचे के बाहर है या
भीतर उसका भी पता उसे शायद नहीं
होगा ।

८-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

जिनको काग़ हारा कहवाया है उन
आपनी बलीआं छेव सकते हैं और सुध
भी कहते हैं- व इतना है कि इन काग़
वहवहा को दुष्ट न भवमें न सकोयको
बननेको काइ ॥ वदव कहते हैं

८-२-४५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

भयुके आशिवि

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जिन के साथ हमारा सहवास है उनसे
अपनी त्रुटियाँ देख सकते हैं और सुधार
भी सकते हैं। बेहतर है कि हम रोज़
के व्यवहार को शुद्धतम रखें तो सच्चे
सेवक बनने की आशा रख सकते हैं।

९-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

सत्यके व्रतकी मुख्य निशानी है की सत्य भी प्रीति का
रक्षण करे। वरुण को तो दूध भी दम पाते हैं। जो कसूर
का त्याग कर देता व्रतों करता है। कादु। सत्य है-आदर
इसका आदर को दते।

१०-२-४५

इश्वर अलख तेरे नाम

आपने आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सत्य के व्रत की शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी
मौन का सेवन करे। ऐसे होते हुए भी
हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत
बातें करते हैं। कारण स्पष्ट है—आदत।
हम इस आदत को छोड़ें।

१०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

हन मिथ जनका सारंग कोर करे मरा हूँ
 किल्ला है कि वे मरते नहीं दार मरना है
 कि वे किन सारंग को कायम रखना है
 उन को सख गुण ह माख मे मया दानि उगार
 काद, उगकी हुन प्रवृत्ति अपना काद कार
 उका मे वृद्धि काद काद. जामा धि पर फुलहि
 ददन उका सारंग काद (ने के कि मेह उगार
 फुलो मणिगु व रई नों उगार मे मूल प्रिया
 कहुं ॥

११-६-४५

मृत प्रियजन का स्मरण कैसे करें ? मेरा
 दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर
 मरता है। लेकिन स्मरण तो कायम
 रखना ही है, उनके सब गुण हमारे में
 यथाशक्ति उतार कर, उनकी शुभ प्रवृत्ति
 अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर।
 समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरण
 को बड़ाने के लिये है। अगर फूलों से
 ही संतुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ती-पूजा
 कहूंगा।

११-२-४५

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

यह कितनी जानक्य का है कि हम मैके रहे
और दूसरों को साफ करने का काम है?

१२-२-७५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे गवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले
रहें और दूसरों को साफ़ रहने की
सलाह दें !

१२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतित पावन सीताराम

दुसरे ऊँ ३ भावे में सावे १०१७ में जो गेहूँ
वई अंशका मा दसगोका ही है, जालिका कभी नहीं
जैसे एकाही गालिको दुष्टों में होता है इसमें
कोई काय, हैई काय, अह काय।

१३-२-१५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

बापूके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

दूसरे और हमारे में, सारे जगत् में जो
भेद है वह अंश का या दरजों का ही है,
जाति का कभी नहीं, जैसे एक ही जाति
के वृक्षों में होता है। इस में क्रोध क्या,
द्वेष क्या, भेद क्या ?

१३-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
॥५॥

पतिव्रत पावन सीताराम

कोई दुःख निश्चय भी मनुष्य को ^{मन} करे के किण्व
विचल पूर्वक करे तो उस को भी न छोड़े.

२४-२-४५

सिद्ध अल्लाह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे
लेकिन विचार पूर्वक करे तो उसे कभी
न छोड़े ।

१४-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ

पतित पावन सीताराम

आइ मीको अपनैको छोको हुनेकी
इच्छा इच्छा है कि वह दूसरों को छोड़कर,
हुनेकी इच्छा कि वही अछि को हु. इच्छा का,
मन्यदा मनाप हुनेको मना हु. हु. हु.
12-2-75

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मोपुके आशुपति

सबको सम्मति दे भगवान

ॐ

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

आदमी को अपने को धोखा देने की
शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोखा
देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इस
बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हरके समझदार
आदमी है।

१५-२-४५

ईश्वर अल्लह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

शो गुस्ता। अजन पर शोभी है उस बात को नें ज पड़े।
पराजन पर गुस्ता। दोस्त को किसे हन पावूँ।
माल है। उसमें जय कैसे?

१६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

जो गुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकने
में जप है। परजन पर गुस्सा रोकने के
लिये हम मजबूर हो जाते हैं। उस में
जप कैसे ?

१६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पतित पावन सीताराम

मन। मानी होज कवन। - वग। मीन। कुटनी -
नहीं, लेकिन ईश्वर की मनुनी कवन। अथर्व
मान। मालिकी मर्या कवन। कवन।

१७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

जीना मानी मौज करना—खाना, पीना,
कूदना—नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति
करना अर्थात् मानव जाति की सच्ची
सेवा करना ।

१७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पवन सीताराम

मनुष्यजीवन काँवे पशुजीवन में फरक क्या है?
इसका सिंघुर्ष विचार करने से हमारी आँखों
उसी क्षणें खुल जाती हैं। १८-२-४५

शिव अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मनुष्य जीवन और पशु जीवन में फ़रक
क्या है ? इसका संपूर्ण विचार करने से
हमारी काफ़ी मुसीबतें हल होती हैं ।

१८-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

मनुष्य जब अपनी दुहरे पाले जाता है
दुहरे पाले काम का जाता है, दिया भी
कदना है लक्ष्मण का, छोटो का कदना है
छोटो का कदना है, छोटा जल है काजी
निकली है, उककाव भी कदना का है
१९-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

मनुष्य जब अपनी हृद से बाहर जाता
है, हृद से बाहर काम करता है, विचार
भी करता है, तब उसे व्याधि हो सकती
है, क्रोध आ सकता है। ऐसी जल्दबाजी
निक्कमी है, नुकसान भी कर सकती है।

१९-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

३२।५ प्रातःकाल के भजन में श्री हनु
इसको कमाने की भी प्रार्थना, इस प्रार्थना
इसकी १२ प्रार्थना है।

२०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पति पावन सीताराम

आज प्रातःकाल के भजन में था ईश्वर
हम को कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं
वही सच्चा दुःख ।

२०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



मति पावन सीताराम

म व ई ध र न ही व मा मा पा ह ला, न व न
ध न व पा प र म, न मा ल पि ता, न व ड (ह क र)!!!
न व र मों क म। क र म। पा ह ले?

- 21-2-85

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पति पावन सीताराम

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न
धन बचायगा, न मातपिता, न बड़ा
डाक्टर !!! तब हमें क्या करना
चाहिये ?

२१-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

शायदे आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

हमारा गंधर्व हमने एक नही की फल
है एक एक प्रथम फल फल है
गुण है एक है फल
२२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

ध्यापके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

हमारी गंदगी हमने जब नहीं निकाली है,
तब तक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक
है क्या ?

२२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आमीर्

सबको सन्मति दे भगवान

माता में, उसी संत ने फिदाई है, वहुत लसी ५,
 बुद्धवत् की है, उदाहरण, लेकिन फेरनेवाला
 यह माता में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो
 प्रती फेंक दे; यह माता उसको परमात्मा को
 नजदिक ले गाली है, उपने कर्तव्य में साबध
 करती है तो न ले उस विधि पता में आने
 दिखावे.

५६८

२३-२-४५

रघुपति राघव राजाराम

राम

पति पावन सीताराम

माला लें, उसे संत ने फिराई है, वह
तुलसी या सुखड की है, रुद्राक्ष हो, लेकिन
फेरनेवाला यदी माला में ही सर्वस्व है
ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे। यदी
माला उसको परमात्मा के नज्दिक ले
जाती है, अपने कर्तव्य में सावधान करती
है, तो भले उसे विधिवत ले और फिरावे।

वर्षा : २३-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पति पावन सीताराम

हम हैं वधोंकी इच्छा हैं इतीह हम दुखवले
हैं कि मनुष्य नाम, जीव नाम, ईच्छा
अं २। ६.

२४-२-५५

ईश्वर अल्लह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

हम हैं क्योंकि ईश्वर है। इसी से हम
देखते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र,
ईश्वर का अंश है।

२४-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सुपति राघव राजाराम



पतिता पावन सीताराम

न भेदाद मों एक महुवा कप है नई छिहने
न चिता रई न लू फिरी का न महुवा रई
महुवा महुवा को कि मों ई जो परमात्मा से
मलाता है।

२५-२-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

नये करार^१ में एक यह वाक्य है : "तेरे
दिल में न चिंता रहे, न तू किसी का भय
रखे ।" यह वचन उसके लिये है जो
परमात्मा को मानता है ।

२५-२-४५

^१ The New Testament

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

वही नया कबूतर कहला है कि अगर ईश्वर
हमें मालूम नहीं करता है तो हमें नबिष
मानका राजा भी बूझी पता है यह बात
सही उन्ही को जिनको अपने माय मालूम
कराता है।

१६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

वही नया करार कहता है कि अगर ईश्वर
हमें लालच में डालता है, तो उसमें से
बच जाने का रास्ता भी वही बताता है ।
यह बात सही उन्हीं के लिये है जो अपने
आप लालच में फंसते नहीं ।

२६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

नाम की महीना सिर्फ कुछ ही दिनों में
गई है ऐसी नहीं है. बाईस महीने में
गला है. इससे राम को १२ महीने में
है जो कोई ईश्वर का नाम ले तो पुण्य
होगा यही.

१७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

नाम की महीमा सिर्फ तुलसीदास ने ही
गाई है ऐसा नहीं है। बाईबल में मैं
वही पाता हूँ। दसवें रोमन के १३
कलम में कहते हैं जो कोई ईश्वर का
नाम लेंगे वे मुक्त हो जायेंगे।

२७-२-४५

¹ "For whosoever shall call upon the name of
the Lord shall be saved."—*The New Testament*
(Romans 10 : 13.)

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

गुल्लु छीपा नही रहता. वर मनुष्य को
दुख पर लिखवा रहता है. उसे शांति का
इम दूरे तारस नही जाव ते ले कि व शांति
हास है.

२८-२-५५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

गुनाह छिपा नहीं रहता । वह मनुष्य के
मुख पर लिखा रहता है । उस शास्त्र
को हम पूरे तोर से नहीं जानते, लेकिन
बात साफ़ है ।

२८-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

31/1/40 को बाहु बल को फिरो 46 रू।
दुं-आज मर दरे वग। दुं: माइ। को जो कुछ
जुम गोवागो उ हूँ निजै।। (मेश २१.२२.)
२-३-५

शिव अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

आजकल बाईबल के फ़िक्के पढ़ रहा
हूँ । आज यह देखता हूँ : “श्रद्धा से
जो कुछ तुम मांगोगे, तुम्हें मिलेगा ।”
(मेथी २१-२२)

१-३-४५

¹ “And all things, whatsoever ye shall ask in prayer,
believing, ye shall receive.”—*The New Testament*
(St. Matthew 21 : 22.)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



निर्वल को बल दान को जोर है साम ३४. २८ मं
है जो नुदगमा है त को नमही को परमात्मा है ही
और जिस को राया परमात्मा परमात्मा है त को बल
नता है.

2-2-82

एषुके भागिनि

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

‘निर्बल के बल राम’ के जैसा ही साम
३४-१८ में है। जो टूट गया है उसके
नजदीक परमात्मा है ही, और जिस को
सच्चा पश्चाताप हुआ है उसे बचा
लेता है।’

२-३-४५

¹ “The Lord is nigh unto them that are of a broken heart ; and
saveth such as be of a contrite spirit.”—*The Old Testament*
(Psalm 34 : 18)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

श्रीगुरु के आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपाते राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

31 दिसम्बर 1972-73 में काटता हूँ उदित
कमोदि परमात्मा तुम्हारे पाक हूँ
३-३-७३

अब उल्ला के नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सम्मते दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

आइलामा ४१-१० में कहती है : डरो
नहीं, क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास
ही है ।^१

३-३-४५

^१ "Fear thou not ; for I *am* with thee."—*The Old Testament*
(Isaiah 41 : 10)

ईश्वर अल्लम तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान *

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

एक ईश्वर हैं ही संपूर्ण इति है. इम कि ये ईश्वर
हैं ही इमहा के लोके विद्या में रचवाया है
इवमान परम भी नहीं. (इत्यादि २६-अंश)
४-३-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान



एक ईश्वर में ही संपूर्ण शक्ति है। इसलिये
ईश्वर में ही हमेशा के लिये विश्वास
रखा जाय, इनसान पर कभी नहीं।
(इसाया २६-४ से)

४-३-४५

¹ "Trust ye in the Lord for ever: for in the Lord
Jehovah is everlasting strength."—*The Old Testament*
(Isaiah 26 : 4)

पानी का स्वाद नीचे जल में पड़ा है।
इसी तरह दुर्गुण नीचे जल में पड़े हैं।
इसीलिए ये बहुत बुरा है। इसे चढ़ा दो।
सद्गुणों में से जल पार है। इसीलिए
उसके लक्षण का पता चला है।

५-३-५५

रघुपति राघव राजाराम



पतिता पावन सीताराम

पानी का स्वभाव नीचे जाने का है ।
इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है,
इसलिये सहल होना ही चाहिये । सद्गुण
ऊंचे ले जाता है, इसलिये मुश्किल सा
लगता है ।

५-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

मेरी कृपा तबे लि मे काफ़ी होनी चाहीये
क्योंकि मेरा एक दुर्बलता है ही पूर्ण होता है।
(२१/१२-९)

१-२-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

“मेरी कृपा तेरे लिये काफ़ी होनी चाहिये,
क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता
है।” (२ कोर :- १२-९)

६-३-४५

¹ “My grace is sufficient for thee : for my strength
is made perfect in weakness.”—*The New Testament*
(2 Corinthians 12 : 9)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा
बन्धु है और वही आत्मिक समर्थ
हमारी रक्षा करता है. (सा. २६-१)

१-३-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पतित पावन सीताराम

“ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा
बल है और वही आपत्ति के समय में
हमारी रक्षा करता है।” (साम ४६-१)

७-३-४५

¹“God is our refuge and strength, a very
present help in trouble.”—*The Old Testament*
(Psalm 46 : 1)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

ईश्वरका कौन है: मैं आनंद कलम, भविष्य में
हूँ। मैं सब जगह में हूँ, सब मेरे हैं। इतना जानने
हूँ मैं राम ईश्वर से पूर जागते हैं और बिना किसी
अपूरण है। कलम। कलम। कलम। कलम। कलम। कलम।
कलम। कलम। कलम। कलम। कलम। कलम।

२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

ईश्वर का कौल है : मैं आज हूं, कल
था, भविष्य में हूंगा; मैं सब जगह में
हूं, सब में हूं। इतना जानते हुए भी हम
ईश्वर से दूर भागते हैं और (जो)
विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते
हैं और दुःखी होते हैं। इस से अधिक
आश्चर्य किसी में है ?

C-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

प्रतिपत्ति पावन सीताराम

पूर्व पश्चिम में भेद न करें. हर कवच
को ही की हो उसकी तुलना। गुण दोष
करें. लक्ष ही क्षुब्ध व्यापक कर सकें ते हैं.

९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको संमति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पतित पावन सीताराम

✓ पूर्व पश्चिम में भेद न करें। हरेक वस्तु
कहीं की हो उसकी तुलना गुण दोष पर
करें। तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं।

९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

पाप-पुण्य, दुख-सुख का फल ? ईश्वर ही है
ईश्वर चाहे तो है। ई. व. नित्य ही है।
भी. इतना कि ईश्वर कि मनुष्य का फल
का फल वनवा है। ईश्वर ही है।
दुख-सुख का फल है।
२०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पतित पावन सीताराम

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों ? ईश्वर होते
हुए ईश्वर व्यक्ति नहीं है। वह नियम
है, नियंता भी। इसका अर्थ हुआ कि
मनुष्य कर्म का भोग बनता है। सत्कर्म
से चढ़ता है, दुष्कर्म से पड़ता है।

१०-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

समाज की सच्ची सेवा यह है जिससे समाज
मान्य हो सके। उंचे चढ़ें। समाज हरे
कर ही पहुँच कर सके। ईश्वर
समाज के दो उंचे चढ़ें।

११-३-५५

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

समाज की सच्ची सेवा यह है जिस से
समाज, मानी सब लोग, ऊंचे चढ़े । समाज
देख कर ही मनुष्य कह सकता है अमुक
समाज कैसे ऊंचे चढ़े ।

११-३-४५

इश्वर अल्लह तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२४

पति पावन सीताराम

मनुष्य जानता है कि जब करने के नज़दीक पहुँचता
है शिवाय ईश्वर को कोई कारगर नहीं है, तो भी
साधना में तेरियफ़िमाइल होली है. ऐसे क्यों?

22-3-25

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

मनुष्य जानता है कि जब मरने के
नज़दीक पहुँचता है सिवाय ईश्वर के
कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम
लेते हिचकिचाहट होती है। ऐसे क्यों ?

१२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

॥ प्रभु के आशीर्वाद ॥

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

अहिंसा को नाफती समतं मृता पानको/
एक ही मागि है: मरकर जीते है, मरना
कम नहीं:

२१-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

10 } अहिंसा के मार्फत स्वतंत्रता पाने का एक
ही मार्ग है : मर कर जीते हैं, मार कर
कभी नहीं ।

१३-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मरें कैसे! आता हूँ। को को, कभी नहीं
आवदमकवा पर मरने की तैयारी रखकर
मरें जब तो जिंदा रहने को। किसे मरें।

१४-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मोपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मरें कैसे ? आत्महत्या करके ? कभी
नहीं । आवश्यकता पर मरने की तैयारी
रख कर मरें तब तो जिंदा रहने के
लिये मरें ।

१४-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

धर्म ही, धार्मिक कर्म कथा नही दो
सकत। है! उमका नजरबजो नेना आहे
उमको दो ग। दिव ककना है
१५-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आमीवदि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

धैर्य से, शांति से क्या नहीं हो सकता है !
उसका तजर्बा जो लेना चाहें उनको रोज़
मिल सकता है ।

१५-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबकी सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

किरमान ओरे मुक पार्थक। इण्डा राज
मन्त न। है। अमुक पार्थक ते व इंडा
परिणाम ईव व पर छोड़े.

१६-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

क्रिस्मत और पुरुषार्थ का भगड़ा रोज़
चलता है। हम पुरुषार्थ करते रहें और
परिणाम ईश्वर पर छोड़ें।

१६-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

किरागत पर न सब छोड़ें, न पुन पार्थक्य।
प्राण करे। किस पर चमकी रहूँगी। इत
देखे कहां देखन दूँको मते हैं, देना। फर्क
होना है, पक्षी। म कुछ भी हूँ।

१७-३-४५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

क्रिसमत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ
का फांका करें। क्रिसमत चलती रहेगी।
हम देखें कहां दखल दे सकते हैं, देना
फर्ज होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापू के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान्

रघुपाते राघव राजाराम

ॐ
२१५

पतित पावन सीताराम

हुं २१६ बालता यह है कि हम जानते हैं कि
करना, तो किन्तु उसे हम कब नहीं पाते. इसका
उत्तर इसके मनुष्य अपने किसे है:

१८-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबका सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पातित पावन सीताराम

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते
हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर
नहीं पाते। इसका उत्तर हरेक मनुष्य
अपने लिये दें।

१८-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको संमति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

प्रतिदीप अंगुल लेवाई कि मोन सवेसि
माष पाई, मगर को लनाही या हीने को क
लका को लो. एव शबू से यले गो होन ही.

१९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके आशुर्वि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन
सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही
चाहिये तो कम से कम बोलो। एक
शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
५५

पतित पावन सीताराम

छोटी रक्षातं गव इलाक करे न वस मग्न,
कि कहां भ आसक्ति है. उस वं हो और
निकाला. बड़ी बालों में हम सी घेरुते
हैं. गुरा. मा. नना भम है. बड़ी बालों में
हम मग्न वृ. हुते हैं. उस क. न. म सीध,
मन न ही है.

20-2-87

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम -

ॐ
११५

पतित पावन सीताराम

छोटी २ बातें जब हलाक करें तब
समझना कि कहां भी आसक्ति है। उसे
ढूँढो और निकालो। बड़ी बातों में हम
सीधे रहते हैं ऐसा मानना भ्रम है। बड़ी
बातों में हम मजबूर होते हैं। उसका
नाम सीधापन नहीं है।

२०-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

कैपुके आशीर्वाद

सबको संमति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

होसो गोके पूरु कलह र खनोका
अओक पूरु इ : मा मा म्यपअने
हो जात है उरु क इ न कव ।

२२-३-४५

हैश्वर अल्ला तेरे नाम

प्रायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

ऐसे मौके पर याद रखने का श्लोक यह
है : मात्रा स्पर्ष आते हैं जाते हैं, उसे
सहन करो ।

२१-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मां कुछ करें, सुख के लिए न करें पा न करें-इसका
प्रत्यक्ष दर्शन दिल में होता है-आम वृक्ष के फल
का ही निधि भी-गीता पाठ्यपाठ-उक्त
कुछ भी रसवटी भी.

२२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

श्रीगुरुजीवरि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



प्रतिपत्ति पावन सीताराम

जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न
करें। इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता
है। आज खूब हुआ। बा की तिथि
थी। गीता पारायण थी। उस में कुछ
भी रस नहीं था।

२२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

ग़लती ग़लती मिली है जब दूर ली क
म ते है ग़लती जब दूर है ते हों ते
फाड़ के जैसी फूटती है और म पंख
खरप चली है.

२३-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१॥॥

पति पावन सीताराम

५५०

गलती गलती मिटती है जब दुरस्ती कर
लेते हैं। गलती जब दबा देते हैं, तब
फोड़ा के जैसी फूटती है और भयंकर
स्वरूप लेती है।

२३-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान्

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

माता को परचा नरेश, उतका द्या
दवने और उतके पुणों को उतु कर पकने
से न तुम्हें उं यो जाता है उतका करने
नी ये मारा है

२४-३-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपाति राघव राजाराम



पतिता पावन सीताराम

आत्मा को पहचानने से, उसका ध्यान
घरने से और उसके गुणों का अनुसरण
करने से मनुष्य ऊंचे जाता है । उलटा
करने से नीचे जाता है ।

२४-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवानि

धौ प किसे कैं? शिवाया म कइते हैं एक
 लुकी-झामकी-लो, गहरे मिनारे बोंबोअरे
 लुकी पर पानी का बुंद लगे-आर धैर्य हुआ
 आगे नगदी का में एसी बरि है जिस में बुंद
 लुकीन दइ कीमत। इवो काय बहाव लुकी
 लुकी होरा। यह कहीवर फूल धैर्य को,
 दृष्टि न है.

२५-३-४५

धैर्य किसे कहें ? शंकराचार्य कहते हैं :
 एक सुली—घास की—लो, समुद्र किनारे
 बैठो और सुली पर पानी का बूंद लो ।
 अगर धैर्य होगा और नज़दीक में ऐसी
 खाई है जिस में बूंद सुरक्षित रह सकता
 है, तो कालवशात् समुद्र खाली होगा ।
 यह करीब २ पूर्ण धैर्य का दृष्टांत है ।

२५-३-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पति पावन सीताराम

जिसे तो दाना दे दूँ नहीं है वह ३१ दिना
पाना न नहीं कर सका है. २६-२-४२

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

माँ प और मनुष्य में क्या फरक? हर दोनों
माँ प पेट को बल चलाता है, मनुष्य करों पर
दरार डरकर चलता है. लेकिन यह हवासा
है. जो मनुष्य मन में पेट को बल चलाता है.
उत्तम कहें?

२७-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सांप और मनुष्य में क्या फ़रक़ ? देखने
में सांप पेट के बल चलता है, मनुष्य
पैरों पर टटार रहकर चलता है।
लेकिन यह देखाव है। जो मनुष्य मन
से पेट के बल चलता है, उसका क्या ?

२७-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

प्राणि हि न मों न क/ न इत्य है हरवरा इ -
हृद के लि मे 37 च्छा है ले किनें जो को मो द
दूक। र ३७। है उर के लि मे जो मों न सुवरा
इं

२८-३-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुके अल्ला

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पवन सीताराम

प्रतिदिन मौन का महत्त्व मैं देखता हूँ ।
सब के लिये अच्छा है, लेकिन जो कामों
में डूबा रहता है उसके लिये तो मौन
सुवर्ण है ।

Note

२८-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

"तुलावली को बहावरी, धीरे धीरे गंभीर!"
प्रति क्षण इस काम को देख जाया है

२९-१-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

“उतावला सो बहावरा, धीरा सो
गंभीरा ।” प्रतिक्षण इसका सत्य देखा
जाता है ।

२९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

निधन का घुरजाना कौ सा खतरनाक है।
मुँह ई आ पा और बोग करवना घुटा।
लिखा ३-४-५५ २०-३-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको संमति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

नियम का छूट जाना कैसा खतरनाक
है ! मुंबई आया और रोज़ लिखना
छूटा ।

(लिखा : ३-४-४५)

३०-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

बगैर निमन के एको भी काम नही बनता।
निमन एको शूरा को जिसे दूह जायतो
सूख मंजुल करार। असो यो ही होजा ५२६।
निवेदा ३-४-२५ ३१-३-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२६५

पतिद पावन सीताराम

बगैर नियम के एक भी काम नहीं बनता ।
नियम एक क्षण के लिये टूट जाय, तो
सूर्यमंडल सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा ।

(लिखा : ३-४-४५)

३१-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति रघुवंश राजाराम



पतिव्रत पावन सीताराम

यह बात छोटे छोटे दिलों को मिले हुए है,
कोयल की हृदय की खेती में उगने वाले यों यों हैं,
होते हुए ही हैं.
मिलने २-४-४५ २-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आधुनिक आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पवन सीताराम

यह बात छोटे, मोटे, सब के लिये है ऐसा
सोच कर हम सीखें और चलें, या ज़िंदा
होते हुए भी मरें ।

(लिखा : ३-४-४५)

१-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२/५

पतित पावन सीताराम

बगैरे गुरुनको दान न दाना ५१.५५,
मगाना है.

मरवा ३-४-४५ २-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

पुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

बगैर जरूरत के हाजत बढ़ाना पापसा
लगता है।

(लिखा : ३-४-४५)

२-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशावर्द्धि

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

आजका दिन फांसीवालों को बचाने को
जिने हुतात्मक का है। अगर कोई माता
मनग बुझ कर आजका का मेकरो ता
अहिंसा को मावनि हुनक बडा का न
किहा हुता।

३-४-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

कपूरजी

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पवन सीताराम

आज का दिन फांसी वालों को बचाने
के लिये हड़ताल का है। अगर लोग
मात्र समझ बूझ कर आज का कार्य करें,
तो अहिंसा के मार्ग में हमने बड़ा काम
किया होगा।

३-४-४५

चिमूर वाले कैदियों के तर्फ इशारा है।

—सम्पादक

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

सायुक्त आत्मनिर्देश

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मनुष्य जानता है कदा कदा
लेकिन जानता है वह कदा कदा है
उत्तमा कदा कदा ?
४-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पति पावन सीताराम

मनुष्य जानता है क्या करना, लेकिन
जानता है वह करता नहीं। उसका
क्या कारण ?

४-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

मायुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
रे राम

पति पावन सीताराम

अगर हम बार के मासिक बापुमंडल के
अव नीला बं लो हुआ नाई ही है चीप
नाले के दी मों के बारे में प्रतिदिन बापुमंडल
बदलता ही बदलता है. हम को लिये पोषण
करे और अनाकार रहे.

५-४-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापु के आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल
के असर नीचे आवें, तो हमारा नाश ही
है। चीमूर वाले कैदियों के बारे में
प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है।
हम कर्तव्य पालन करें और अनासक्त
रहें।

५-४-४५-

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सी धी पावको भी मनुष्य देखी सही
उहोसहन कादम्य मो कितनी मंरी अहिका।
चाहीमी!

६-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

सीधी बात को भी मनुष्य टेढ़ी समझे,
उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा
चाहिये !

६-४-४५

ईश्वर अल्लभ तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

शरीर को बचाने के लिये बड़बड़काई करवा
आत्मा को पशुपति के लिये इवना
करवाइवना ?

९-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

शरीर को बचाने के लिये बहुत उद्यम
करता हूँ, आत्मा को पहचानने के लिये
इतना करता हूँ क्या ?

७-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

गौरसम जुलियो मे गुस्ता करवा दूं, रोता दूं, हसता दूं,
रहता दूं, यही सब कर, धीरे धीरे,
गौरसम जियोगी ही एक मर, धर्म ही ईकाया?

८-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पति पावन सीताराम

गैर-समझ से मैं गुस्सा करता हूँ, रोता
हूँ, हंसता हूँ, रहम खाता हूँ। यह सब
छोड़ कर, धीरज रख कर, गैर-समझ
मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं है क्या ?

८-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

इह जगत् मानें? इहारी लारी को, इहारी मिट्टी? धनो
 राज ल हो सकते हैं: तब इहारा इगता फल इह हो करें?
 इह में भी लो को फी राखली पाई जानी है. इह कैसा
 है सो तो इहिए इहो जानना है, सो किये नरु तो इहो करेना
 गही है. अच्छा तो यह है कि इहो अपने मारे में कुछ
 जाने नही. माने नही: मेरे हैं देखें हैं. जानने में और
 मानने में इहो कुछ फाट है नही पड़ो पड़ा. इहो
 धर्म पालन ही सच्चा फल है.

९-४-४५

हम क्या मानें ? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा ? दोनों ग़लत हो सकते हैं । तब हमारा इनसाफ़ हम ही करें ? इस में भी तो काफ़ी ग़लती पाई जाती है । हम कैसे हैं सो तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं है । अच्छा तो यह है कि हम अपने बारे में कुछ जाने नहीं, माने नहीं । जैसे हैं वैसे हैं । जानने से और मानने से हमें कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचता । हमारा धर्म पालन ही सच्ची बात है ।

९-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२५

पति पावन सीताराम

अंधा वरुणही जिसकी आंख फुट गई है।

अंधा वरुणही अपने दोष दंकावा है।

१०-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२८/५

पतित पावन सीताराम

Note
अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।

१०-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मनुष्य की शांति की करौटी समाज में ही
होसकती है, हिमाचल की रीच पर नहीं।

२१-४-२५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आधुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

२६७
मनुष्य की शांति की कसोटी समाज में
ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर
नहीं।

११-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

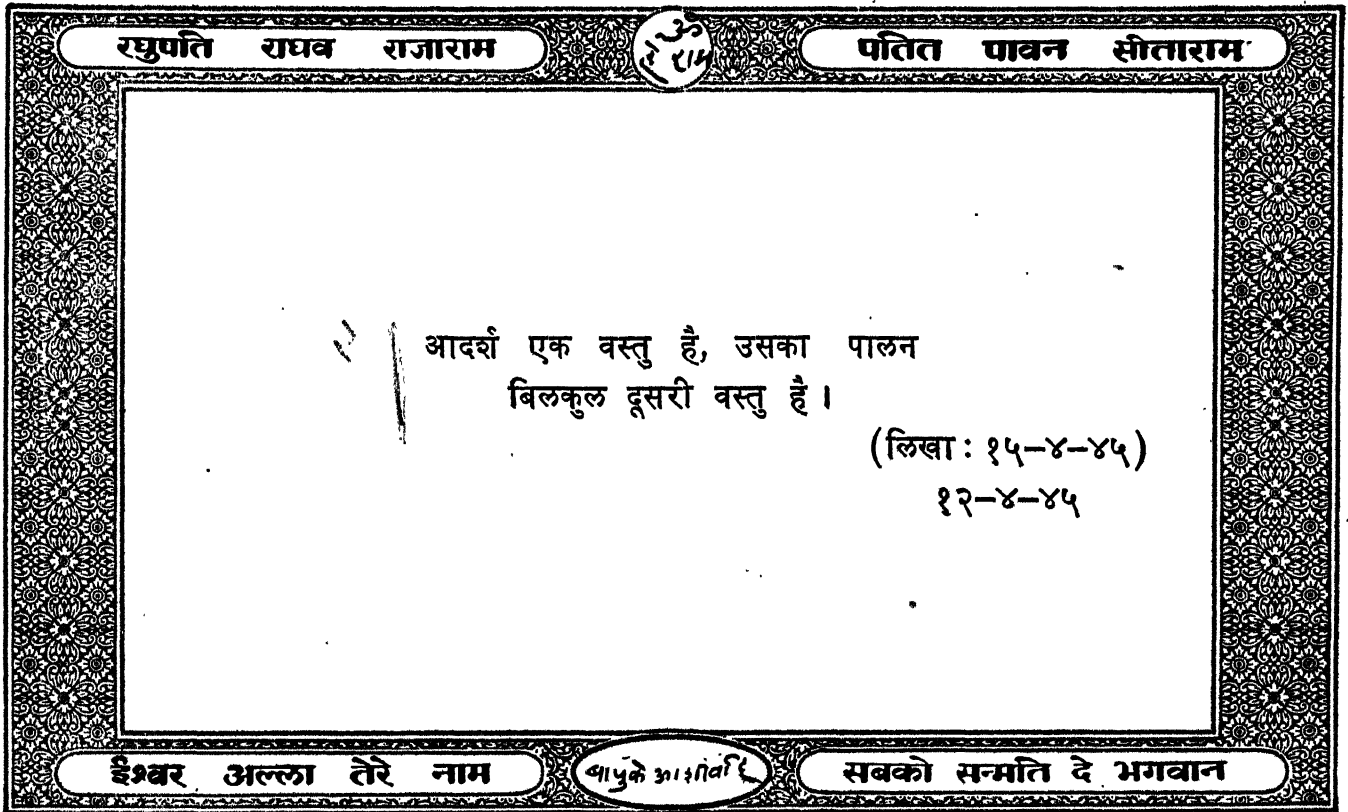
पतित पावन सीताराम

आइ ई एक वस्तु है, एक ही पान्थ व बिलकुल
दू को ही वस्तु है.
लिखा १५. ११. १९५५ १२-४-५५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम

ॐ
२१५

पति पावन सीताराम

सिवाय ३१६६ को मनुष्य सुकाय र शिव जडाके
जैसा है.

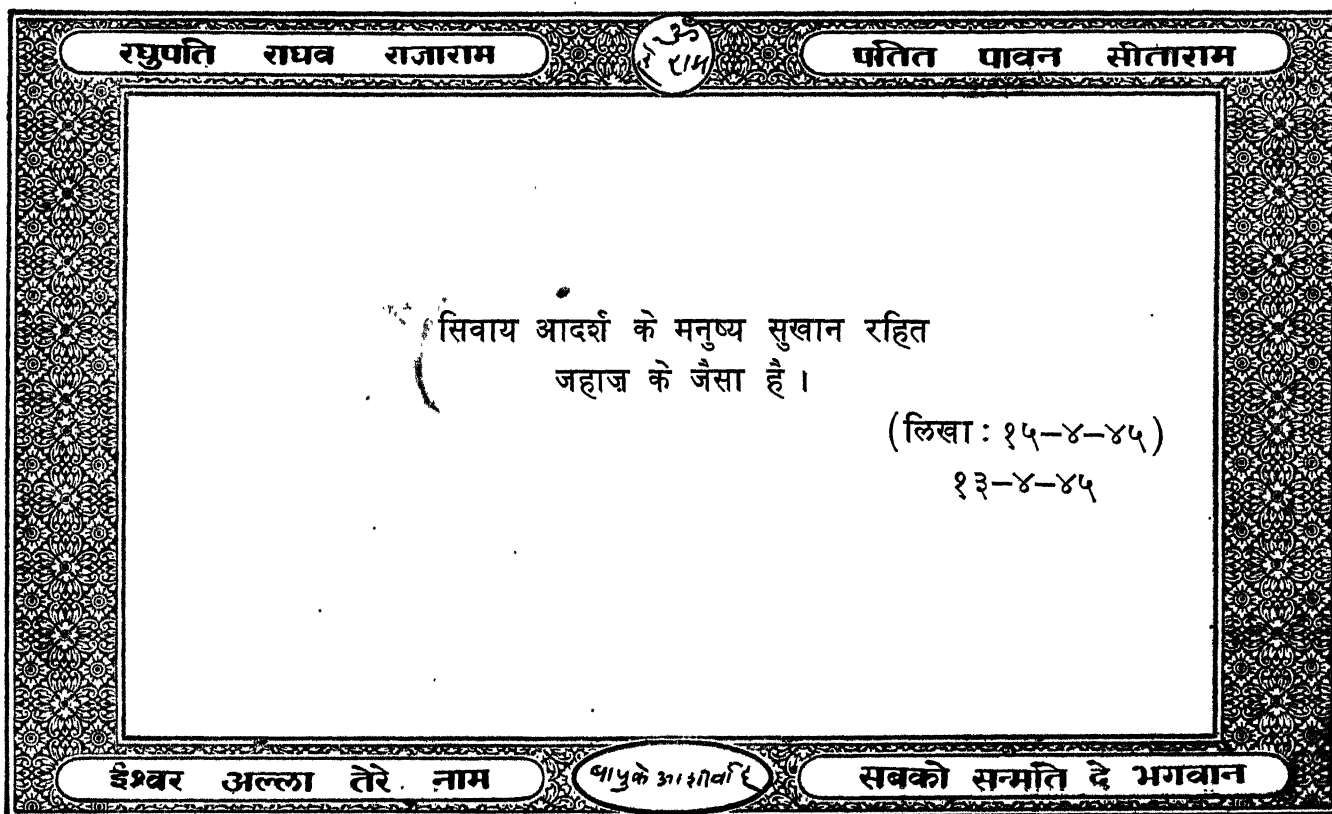
लिखा १६-४-४५

१३-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



रघुपति राघव राजाराम



पतित पावन सीताराम

मरे पाक आदर है ऐसे नद ही कड़ाया
जब मैं उस पशु ने को को दी
कर लाई.
1 जिला धूमना १४-४-५५

इश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

मेरे पास आदर्श है, ऐसे तब ही कहा जाय
जब मैं उसे पहुँचने की कोशिश करता हूँ ।

(लिखा: १५-४-४५)

१४-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

शायदे आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

इम काउरी का हो संतुष्ट रहें व द्वाते कि कोइ निहा
मही और ममा का कि हो. परिणाम सि फी काउरी का
पर निजरि नहिं रहता. और चीजों को ती है जरा
पर इहारे को ई अंकुश नहिं रहता.

१५-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पवन सीताराम

हम कोशिश से संतुष्ट रहें, बशर्तेकि
कोशिश सही और यथाशक्ति हो ।
परिणाम सिर्फ कोशिश पर निर्भर नहीं
रहता । और चीजें होती हैं जिस पर
हमारा कोई अंकुश नहीं होता ।

१५-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सम्मति दे भगवान

सही कोइरी है। किसे कहें? एक बात यह है कि
 सही कोइरी का ही बहुत बल हमें दखिब फल मिलता
 है। हम लिये फल सही कहा जा रहा है कोइरी ही सही
 भी। लेकिन अनुभव से पातुन होता है ऐसे ही।
 गड़ी बनना। सही कोइरी यह है कि धर्म की
 कामना के बारे में निश्चय है और विपरीत फल
 हर जगह पर भी धर्म बलित नही, न उद्दिष्ट
 फल नही है या कम होता है।

१५-४-५५

सही कोशिश किसे कहें ? एक बात यह है कि सही कोशिश से बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता है। इसलिये फल से ही कहा जाता है कोशिश सही थी। लेकिन अनुभव से मालुम होता है ऐसे हमेशा नहीं बनता। सही कोशिश यह है कि साधन की योग्यता के बारे में निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है।

१६-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पति पावन सीताराम

यथा इति किम् कहे ? जिससे मनुष्य ३१ फी
सह शक्ति व जोर का फायदा ले सकना है। उसे
शुभ प्रयत्न में सफलता प्राप्ति होनी है।

17-2-54

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम



पति पावन सीताराम

यथाशक्ति किसे कहें ? जिससे मनुष्य
अपनी सब शक्ति बगैर संकोच के खर्च
करता है। ऐसे शुभ प्रयत्न में सफलता
प्रायः होती है।

१७-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य अपने निर्जम रहित प्रमाणों को आधारभूत
करके करता है और उस पर चलता है। इसी
द्वारा ही अच्छा है कि जहाँ तक कर्म के फल
निर्जम करना नहीं उगरे परिणाम को वारं
नरक में डाले। निर्जम करने का धर्म न जाना है
नव पुरी की वधानी रख कर ही निर्जम करना।
और निरुद्धाई अमल करना।

१८-४-१५

मनुष्य अपने निर्णय नहिं वत् प्रमाण
को आचारभूत करके करता है और
उसी पर चलता है। ऐसी हालत में
अच्छा है कि जहां तक बन सके कुछ
निर्णय करना नहीं और परिणाम के
बारे में तटस्थ रहना। निर्णय करने का
धर्म बन जाता है, तब पूरी सावधानी
रख कर ही निर्णय करना और निडरता
से अमल करना।

१८-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
१५

पतित पावन सीताराम

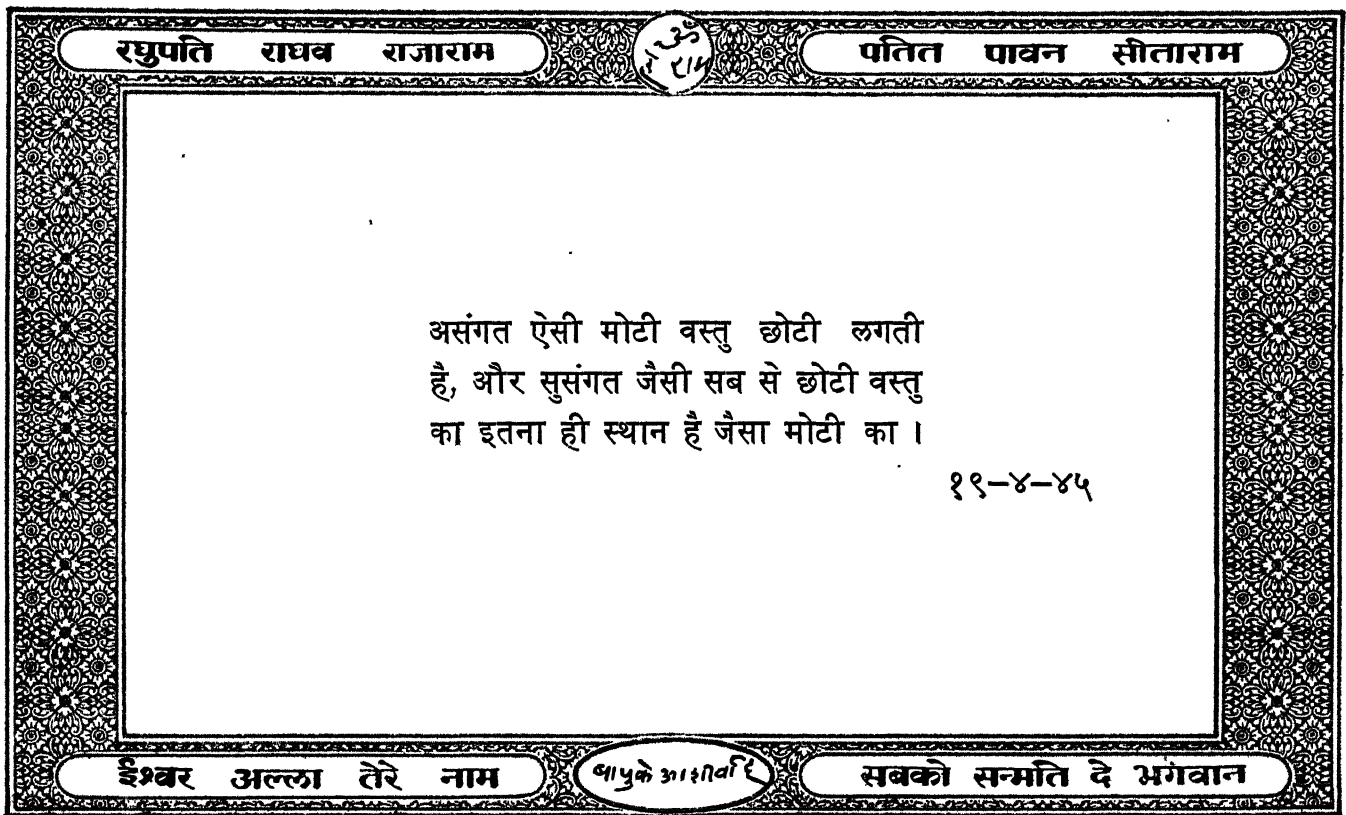
अकेला न छोड़ो छोटी वस्तु छोटी लगती है और
पुसंगत जैसी राख छोटी वस्तु का इतना है
स्थान है जो छोटी मारी का।

१९-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

आपुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान



परिशिष्ट

१

वृक्षन् से मत ले, मन तू वृक्षन् से मत ले ।

कांटे वाको क्रोध न करही,
सींचे न करहि स्नेह...वृक्ष०
धूप सहत अपने शिर ऊपर,
और को छांह करेत ।
जो वाही को पत्थर चलाय,
ताहि को फल देत...वृक्ष०
घन्य घन्य ओ परोपकारी,
वृथा मनुष्य की देह ।
सूरदास प्रभु कहै लग वरनौ,
हरिजन की मत ले...वृक्ष०

२

अब हौं कासों बैर करौं ?

कहत पुकारत प्रभु निज मुखते ।

“घट घट हौं बिहरी” ॥ ध्रु० ॥

आपु समान सबै जग लेखौं ।

भक्तन अधिक डरौं ॥

ओहरीदास कृपाते हरिकी ।

नित निर्भय विचरौं ॥ १ ॥

अनुक्रमणिका

अ

अनासक्त कार्य—१२२ ।
अनासक्ति—६६, ६८, ६९ ।
अंधापन—२८४ ।
अपनापन—४२ ।
अपनी पहचान—१४२ ।
अपरिग्रह—६, १२ ।
अभय—६, १४ ।
अशांति—२२ ।
असंगत—३०२ ।
अस्तेय—६, १० ।
अस्पृश्यता निवारण—६, १८ ।
अहिंसा—४, ६, २२८, २५४, २७०, २७६ ।

आ

आत्म-शोध—११८ ।
आत्म-हत्या—२३० ।
आत्मा की पहचान—२५०, २७८ ।
आदत, बुरी—१०२ ।
आदम—५८ ।
आदर्श—२८८, २९०, २९२ ।
आलस्य—११२, १३४ ।
आसक्ति—२४२ ।
आसीसी—१२४ ।

इ

इंद्रिय निग्रह—८ ।

इ

ईश्वर—३२, ५०, ६०, १८६, १८८, १९४, २००, २१६, २२२, २२६ ।

” कृपा—२१४ ।

” का क्रौल—२१८ ।

” के नाम—२ ।

” भक्ति—१२२ ।

” विश्वास—२१० ।

ईशोपनिषद्—६६ ।

ईसामसीह—७२ ।

उ

उतावलापन—२६० ।

ए

एकनिष्ठा—३८ ।

क

कस्तूर बा गांधी—२४६ ।

काबू, अपने पर—५८, १४० ।

कासना—१३८ ।

कार्य, अनासक्त—१२२ ।

” , सच्चा—१३० ।

किस्मत—२३४, २३६ ।

कुदरत—१५८ ।

कोशिश, सही—२९४, २९६ ।

कृष्ण, श्री०—७२ ।

ख

खुस्तमस दिन—७२ ।

ग

गंदगी—१८८ ।

गलती—मिटाने का तरीका—२४८ ।

गुनाह—२०२ ।

गुस्सा—१७८ ।

गौरसमभूति मिटाना—२८० ।

ज्ञान, मिथ्या—२६ ।

च

चिमूर—२७४ ।

” वाले क़ैदीयों—२७४ ।

चोरी—१० ।

ज

जगत्—६६ ।
जन्म—६२, ६४, ६६ ।
जमीन—मालिक कौन ? १२६ ।
जल्दबाजी—१८४ ।
जीवन की मानी—१८० ।
,, , मनुष्य—१५६ ।
,, , सच्चा ११०, ११२ ।

झ

झूठ—५२, ५४, ११६ ।

ट

तप—११८ ।
तारीफ़—२८२ ।
तुलसीदास—४६, २०० ।

द

दया—४६ ।
दुःख—६६ ।
,, सच्चा—१८६ ।

दुर्गुण—सदगुण से तुलना—२१२ ।
दुष्कर्म—२२२ ।

ध

धर्म—४६, १५४, १५६ ।
,, पालन—२८२ ।
धोका देना—१७६ ।
धैर्य—२३२, २५२, २५४, २६० ।

न

नया करार—१६६, १६८ ।
नरसौयो, कवि—६४ ।
निडरता—५२ ।
निंदा—२८२ ।
नियम—२६२ ।
,, का महत्त्व—२६४ ।
निर्णय, कभी करना—३०० ।
निश्चय—१७४ ।

प

पद, अमर—१२४ ।

परमात्मा—२०६, २०८ । (देखिये ईश्वर)

परिश्रम—११८ ।

पश्चात्ताप, सच्चा—२०६ ।

पातंजल योगदर्शन—२० ।

पाप—२२२ ।

पुण्य—२२२ ।

पुरुषार्थ—२३४, २३६ ।

प्रतिष्ठा, मनुष्य की—१५२ ।

प्रार्थना—४८, १६० ।

फ

फ्रांसिस, आसीसी के—१२४ ।

ब

ब्रह्मचर्य—६, ८ ।

बाईबल—२००, २०४ ।

बीमारी—७४, ७६, ८०, ८८, १८४ ।

भ

भक्ति—१२२ ।

भगवान्—(देखिये ईश्वर)

म

मनुष्य, आदर्श रहित—२६० ।

” , सांप और, में फरक—२५६ ।

मनुष्य जीवन—१५६, १८२ ।

महादेव देसाई—६० ।

माला फिराना—१६२ । ✓

मीराबाई—३२ ।

मुक्ति—६२, ६४, ६६, २०० ।

मुंबई—२६२ ।

मुर्तीपूजा—१६८ ।

मेहता, जमशेद—१२४ ।

मेहरबानी मांगना—१५० ।

मैत्री—७० ।

मौन—५२, २४०, २५८ ।

मृत्यु—६४, ६६, ११४, २३० ।

य

यथाशक्ति—२६८ ।

योग—२० ।

योगदर्शन, पातंजल—२० ।

र

राम, श्री—७०, ८०, ८२, ८६, ।

रामनाम—२२, ७८, २२६ ।

,, की महिमा—२०० ।

ल

लालच—१६८ ।

व

वचन, सच्चा—१३०, १३२ ।

वाचन, पुस्त—१४८ ।

विचार, मौलिक—११२ ।

,, , विकारी—७६, ७८ ।

वैद्य—८०, ८२ ।

वैर करना—३० ।

व्यभिचार—१३४ ।

व्यवहार, रोज का—१६४ ।

व्याधि—(देखिये बीमारी)

श

शंकराचार्य—२५२ ।

शांति—१४६, २३२ ।

,, की कसौटी—२८६ ।

श्रद्धा—३४, ३६, २०४ ।

स

सत्कर्म—२२२ ।

सत्य—२, २८, १०२, १०४, ११६, १६६ ।

,, की आराधना—६८, १०० ।

,, की शोध—६ ।

,, के दर्शन—४ ।

सत्य सापेक्ष—१०० ।

सद्गुण—२१२ ।

समभाव—६८ ।

समय—१२० ।

समाज, उसकी सच्ची सेवा—२२४ ।

सर्वधर्म समानतव—६, १६ ।

सीधापन—२४२ ।

सीधा रास्ता—४४ ।

सुख—४०, ६६, १०६, १४६, २२२ ।

सुव्यवस्थिता—२४६ ।

सुसंगत—३०२ ।

सेवा, परमात्मा की—१३६ ।

” , खेतान की—१३६ ।

” , समाज की—२२४ ।

स्मरण, मृत प्रियजन का—१६८ ।

स्वच्छता—१२८, १७० ।

स्वतंत्रता, अहिंसा से पाने का मार्ग—२२८ ।

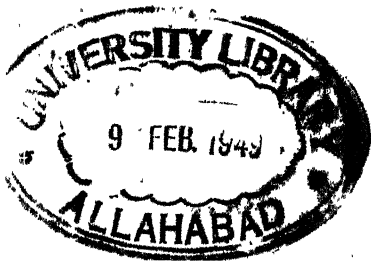
” , सही—१४८ ।

स्वतंत्रता दिन—१३६ ।

ह

हाजत बढ़ाना—२६८ ।

हिमालय—२८६ ।



३१२